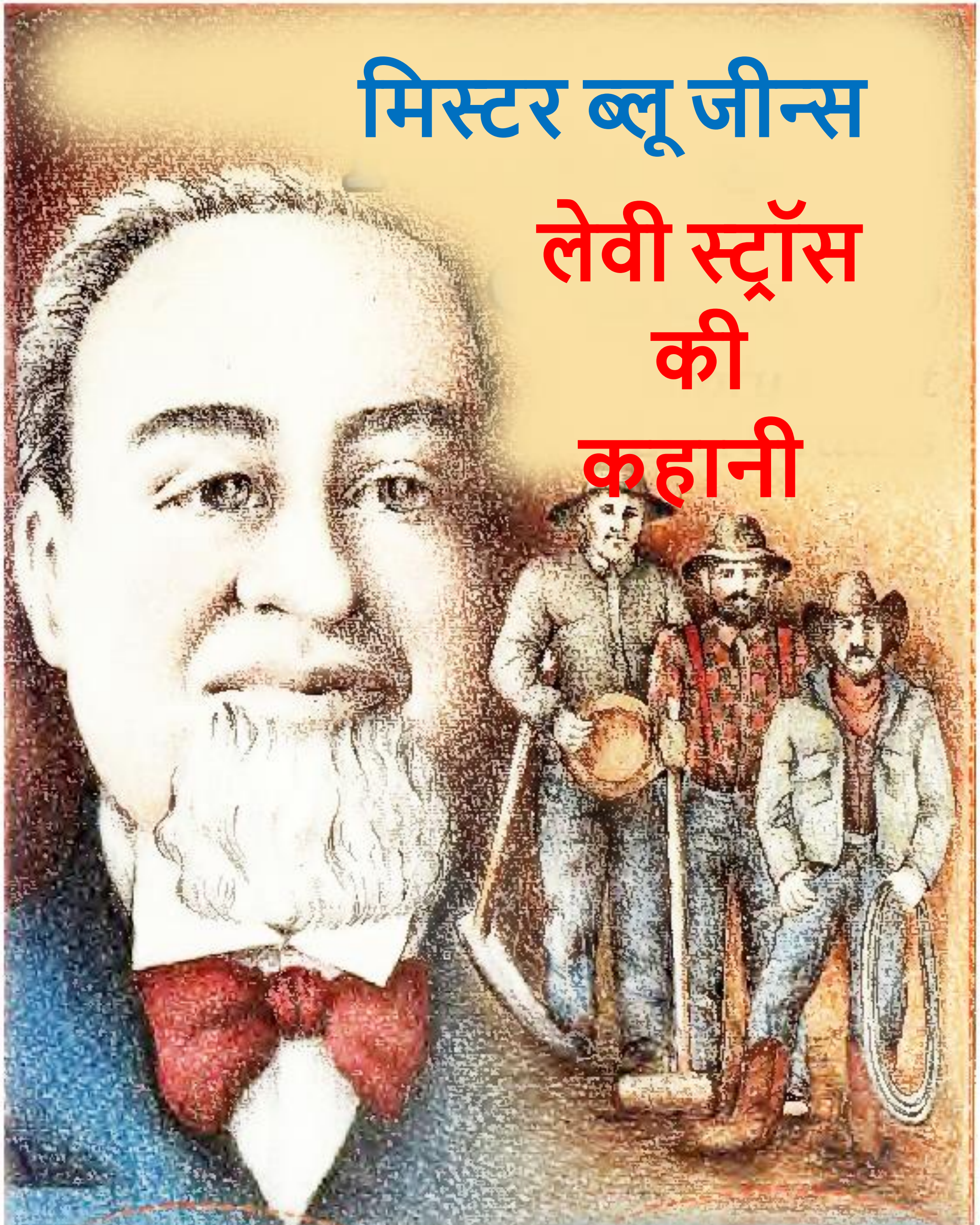
मिस्टर ब्लू जीन्स

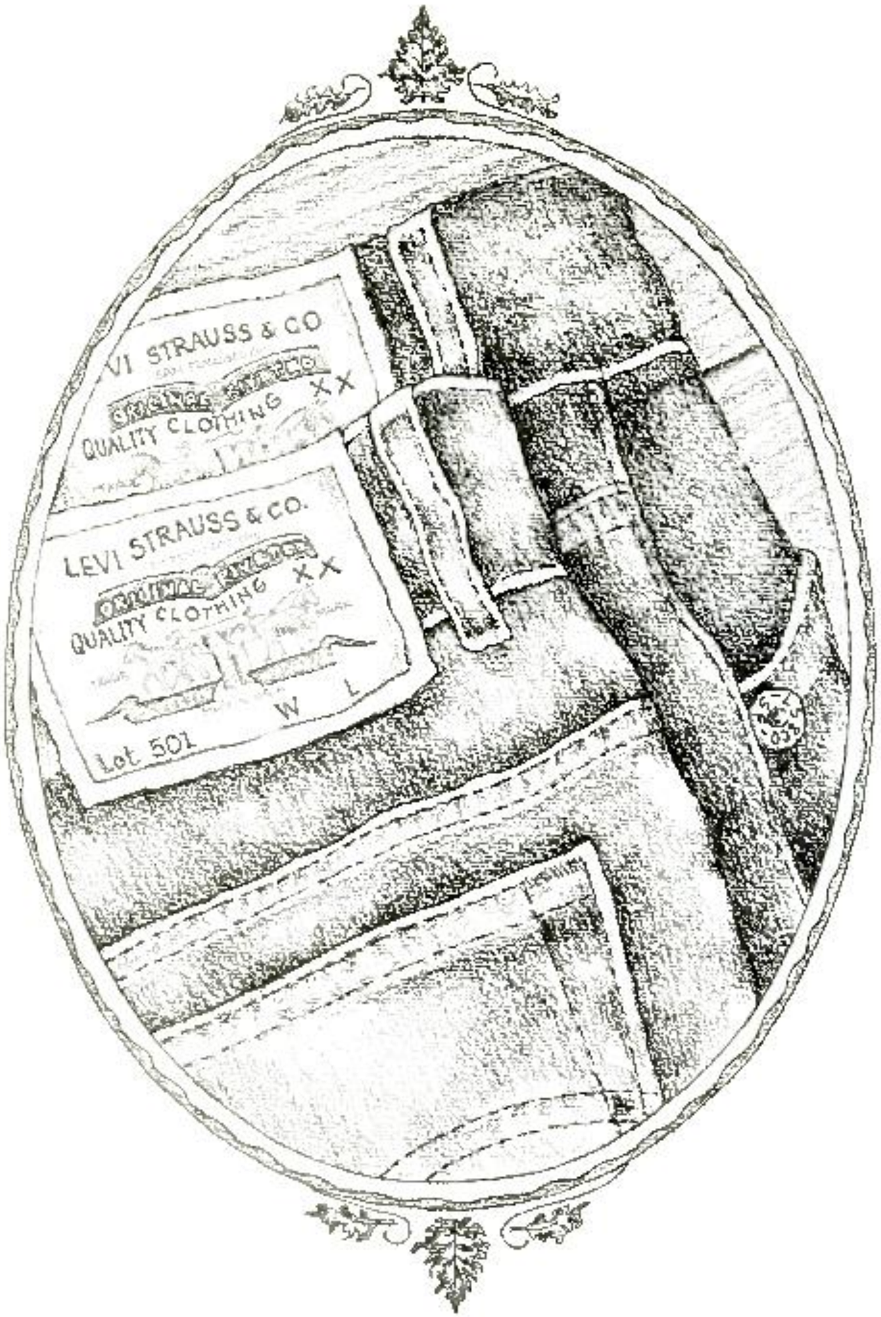
लेवी स्ट्रॉस की कहानी



लेखिका : मैरीऐन वाइट् , चित्रसज्जा : लीडिया एंडरसन

हिंदी : योगेश

मिस्टर ब्लू जीन्स



मिस्टर ब्लू जीन्स

लेवी स्ट्रॉस की कहानी

लेखिका : मैरीऐन वाइट्

चित्रसज्जा : लीडिया एंडरसन

हिंदी : योगेश

रूपरेखा



1
बटनहाइम

सड़कों पर सोना। कीचड़ की जगह सोना। अगर ऐसा हो जाए, तो कितनी राहत मिले!

लोब स्ट्रॉस (जिसे आगे चलकर लेवी कहा जाने लगा) ने अपने कीचड़ से सने जूतों और बटनहाइम की गीली, दलदली सड़कों की ओर देखा।

यह छोटा-सा गाँव जर्मनी और ऑस्ट्रिया की सीमा के पास, बवेरियन आल्प्स पर्वतों की तलहटी में बसा था। हर साल वसंत ऋतु में जब पहाड़ों की बर्फ पिघलती, तो पानी ढलानों से बहकर नीचे आता और गाँव की सड़कों को कीचड़ से भर देता।

लोब अपनी फेरी का भारी थैला उठाए एक संकरी, कीचड़ भरी गली से दूसरी गली में जाता रहा। उसके सिर के ऊपर पुराने, पत्थर और लकड़ी से बने, घरों की खिड़कियों पर रखे फूलदानों से गुलाबी और पीले रंग के छोटे-छोटे फूल झरने की तरह लटक रहे थे। ये घर सैकड़ों साल पुराने थे, फिर भी उनकी दीवारों पर बनी रंग-बिरंगी चित्रकारी ऐसी लगती थी, मानो अभी-अभी रंगी गई हो।

"घरेलू सामान खरीद लीजिए!" लोब ने आवाज़ लगाई।

एक बुज़ुर्ग आदमी और उसकी पत्नी अपने घर के दरवाज़े से मुस्कराते हुए उसे बुलाने लगे। लोब उनके पास चला गया।

"आज तुम हमारे लिए क्या-क्या सामान लाए हो?" बूढ़े आदमी ने पूछा।

लोब ने अपने कंधों से भारी थैला उतारकर घुटने पर रख लिया। उसने सावधानी से थैला खोला, ताकि कोई सामान कीचड़ में न गिर जाए। फिर उसने उन्हें अपने पास रखा सामान दिखाया—बटन, लेस, फावड़े, कुदाल, चम्मच और खाना बनाने के बर्तन।

महिला ने अपने ऊनी कपड़े के लिए, जिसे वह सिल रही थी, थोड़ी-सी लेस खरीद ली। आदमी ने एक कुदाल चुन ली। लोब ने दोनों को धन्यवाद दिया और फिर आगे बढ़ गया।

लोब का जन्म 1829 में बटनहाइम गाँव में हुआ था। उसके पिता, हिर्श स्ट्रॉस, भी इसी सदियों पुराने गाँव में पले-बढ़े थे। वे फेरी लगाकर घरेलू सामान बेचते थे और उसी से अपने परिवार का पालन-पोषण करते थे।

लेकिन दो साल पहले उनके पिता की मृत्यु हो गई थी। तब से लोब, उसकी माँ और उसकी बहनें बड़ी मुश्किल से अपना गुज़ारा कर रहे थे। इसलिए लोब ने भी अपने पिता का वही काम शुरू कर दिया, ताकि परिवार की मदद कर सके।

अठारह साल का लोब जब अपना भारी थैला उठाए घर-घर सामान बेचने जाता, तो उसे अमेरिका जाने वाले लोगों की अनगिनत कहानियाँ सुनने को मिलतीं। लोग कहते थे कि जो वहाँ भिखारी बनकर गए थे, वे भी अब अमीर बन चुके हैं।

लोग एक-दूसरे से कहते, "अमेरिका की सड़कों पर सोना बिछा है। बस जाकर उठा लो।"

पिता की मृत्यु के बाद लोब के सौतेले भाई, लुई और जोनास, न्यूयॉर्क चले गए थे। उन्होंने पत्र लिखकर बताया था कि अमेरिका में तो यहूदी पुरुष भी वोट दे सकते हैं। यह बात लोब को बहुत आश्चर्यजनक लगी।

बवेरिया में यहूदियों को वोट देने का अधिकार नहीं था। सच तो यह था कि वहाँ किसी को भी वोट देने का अधिकार नहीं था। लेकिन हर नए राजा के आने पर यहूदियों के खिलाफ नए-नए नियम बना दिए जाते थे। यह सिलसिला सैकड़ों वर्षों से चलता आ रहा था।

यहाँ तक कि बवेरिया की सरकार यह भी तय करती थी कि एक साल में कितने यहूदी जोड़ों की शादी हो सकती है। उनका मानना था कि अगर शादियाँ कम होंगी, तो यहूदी बच्चों की संख्या भी कम होगी।

लोब जानता था कि अगर वह बटनहाइम में ही रहा, तो सरकार ही तय करेगी कि वह कौन-सा काम करेगा और कहाँ रहेगा। पहले से ही उसका परिवार गाँव की ज़्यादातर सड़कों पर नहीं रह सकता था। उन्हें गाँव के उस हिस्से में रहना पड़ता था जिसे "यहूदी गली" कहा जाता था।

इतना ही नहीं, केवल यहूदी होने के कारण स्ट्रॉस परिवार को अपने घर और कारोबार पर अलग से विशेष कर भी देना पड़ता था।

लेकिन अमेरिका में लोब अपनी पसंद का कोई भी काम कर सकता था और जहाँ चाहे वहाँ रह सकता था। करों के बारे में उसे ज़्यादा जानकारी नहीं थी। फिर भी वह सोचता था कि अगर सचमुच सड़कों पर इतना सोना बिखरा है, तो कर चुकाना कोई बड़ी बात नहीं होगी।

तब तक लगभग दस हज़ार यहूदी बवेरिया छोड़कर नए देश, यानी अमेरिका, जा चुके थे। पास के हेगेनबाख गाँव में भी बारह नौजवानों ने पासओवर के वसंत उत्सव के तुरंत बाद देश छोड़ने का निश्चय किया था।

बटनहाइम के बहुत-से यहूदी परिवार भी जा चुके थे। अब लोब भी उनके नक्शे-कदम पर चलना चाहता था।

अप्रैल और मई के पूरे महीने, जब लोब कीचड़ भरी गलियों में फेरी लगाने में व्यस्त नहीं होता था, तब वह अपनी माँ और अपनी बहनों, वोगेला और माइला, से न्यूयॉर्क जाने की बात करता रहता था।

उधर उसके सौतेले भाई, लुई और जोनास, लगातार अमेरिका से पत्र भेज रहे थे। वे नए देश की खूबियाँ बताते थे। उन्होंने लिखा कि जो लोग उनसे पहले अमेरिका आए थे, वे उन्हें "ग्रीनहॉर्न" कहते थे। यह शब्द उन नए लोगों के लिए इस्तेमाल किया जाता था, जिन्हें अभी वहाँ का कोई अनुभव नहीं था। फिर भी उन्होंने मेहनत और समझदारी से पैसे खर्च करके अच्छी कमाई शुरू कर दी थी। उन्हें अपनी ज़िंदगी से कोई शिकायत नहीं थी।

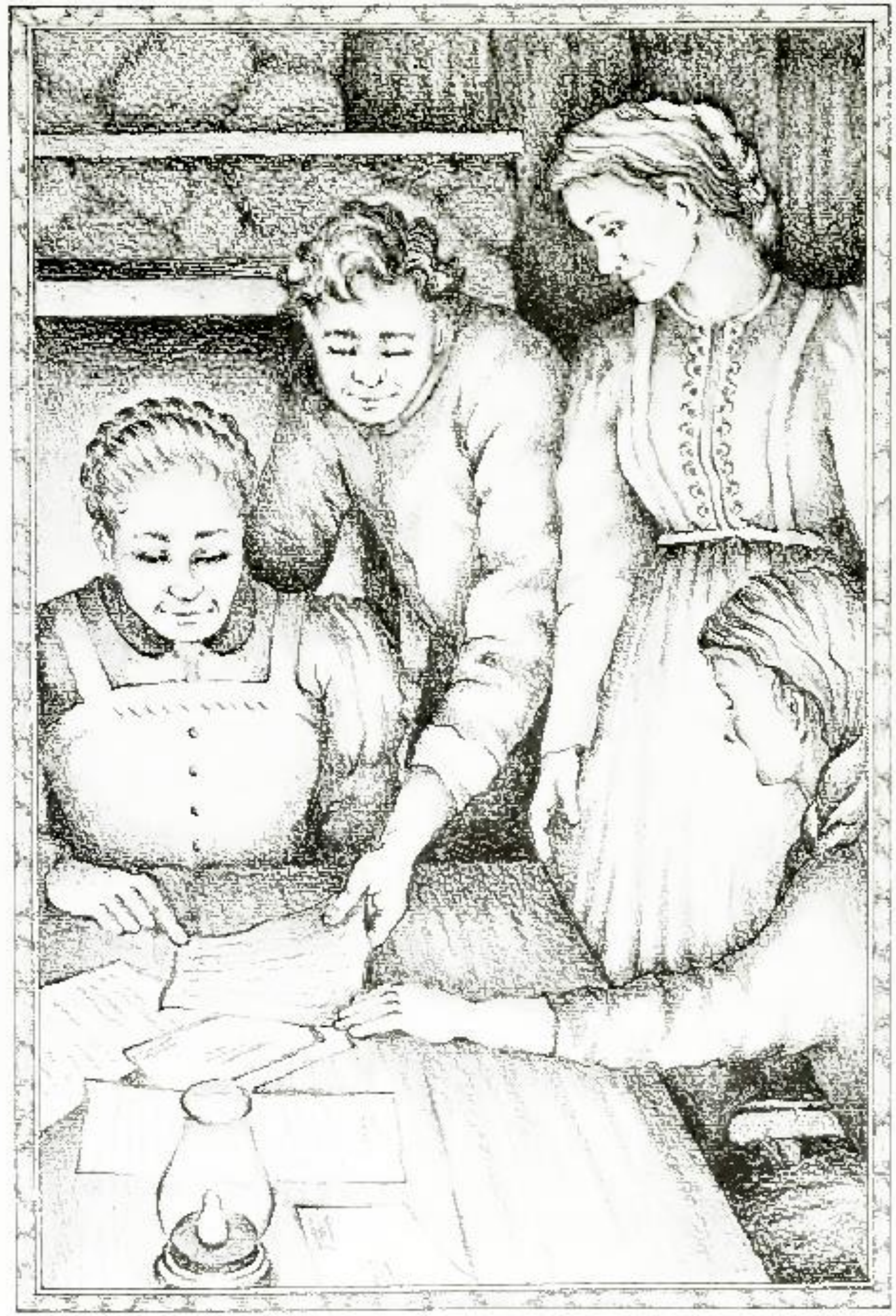
आखिर जून 1847 तक लोब की माँ, रेबेका स्ट्रॉस, भी अमेरिका जाने के लिए तैयार हो गईं। उन्होंने बामबर्ग की अदालत में देश छोड़ने की अनुमति देने वाले ज़रूरी कागज़ों के लिए आवेदन किया। उनका आवेदन स्वीकार कर लिया गया।

अब स्ट्रॉस परिवार अपने पुराने घर को छोड़ने की तैयारी करने लगा।

वे अपने साथ बहुत कम सामान ले जा सकते थे, क्योंकि जहाज़ में ज़्यादा सामान ले जाने की अनुमति नहीं थी। समुद्री यात्रा के बारे में उन्होंने बहुत-सी बातें सुन रखी थीं। इसलिए वे अपना खाना साथ ले जाने वाले थे। जहाज़ पर मिलने वाला भोजन यहूदी धार्मिक नियमों के अनुसार नहीं बनाया जाता था।

कोशर भोजन के अलावा लोब की माँ ने बिस्तर, परिवार के पीतल के मोमबत्ती-स्टैंड और अपना समोवर भी साथ रखा। समोवर एक धातु का बर्तन होता है, जिसमें चाय के लिए पानी गरम किया जाता है।

घर छोड़ने से पहले रेबेका ने अपने दोस्तों और पड़ोसियों से कहा, "हम जो सामान यहीं छोड़कर जा रहे हैं, उसमें से जिसे जो पसंद हो, वह ले जाए।"



ब्रेमेन का बंदरगाह लोगों से भरा हुआ था। हर कोई अपने साथ गठरियाँ, थैले और बड़े-बड़े बक्से लिए घूम रहा था। बंदरगाह पर कुछ दिन रुकने के बाद आखिर जहाज़ ने अपनी यात्रा शुरू कर दी।

मछली की तेज़ गंध के बावजूद लोब खुश था कि उसकी माँ ने यात्रा के लिए भरपूर हेरिंग मछली, काली रोटी और चाय साथ रख दी थी। दूसरे यात्रियों को रोज़-रोज़ केवल सेम और सूअर का मांस ही खाना पड़ता था। लेकिन जब समुद्र में जहाज़ ज़ोर-ज़ोर से हिलने लगा, तब लोब को इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ा कि उसने क्या खाया था। समुद्री बीमारी के कारण उसका ज़्यादातर खाना वैसे भी पेट में टिक नहीं पाता था।

लोब सोचता था कि ज़्यादा बुरा क्या है—जहाज़ के निचले हिस्से की तंग और घुटन भरी जगह में समुद्री बीमारी से परेशान होना, या ऊपर डेक पर रहना, जहाँ हर समय समुद्र की लहरों में बह जाने का डर बना रहता था।

जहाज़ के निचले हिस्से का कमरा इतना छोटा था कि कोई सामान्य कद का आदमी भी सीधा खड़ा नहीं हो सकता था। वहाँ हर समय नमी और गंदगी रहती थी। आखिर ऐसा क्यों न होता? लगभग तीन सौ लोग एक छोटे-से खलिहान जितनी जगह में ठूँस दिए गए थे। वहाँ किसी को भी अकेले रहने की जगह नहीं मिलती थी और नहाने-धोने के लिए केवल खारा समुद्री पानी ही उपलब्ध था।

यात्री एक-दूसरे के इतने पास रहते थे कि अगर किसी एक को उल्टी होने लगती, तो दूसरे को बच पाना मुश्किल हो जाता था। सोने के लिए केवल एक लकड़ी का तख्ता और एक कंबल मिलता था। लेटने भर की जगह थी। कपड़े खोलकर रखने या टाँगने की तो कोई जगह ही नहीं थी।

हालाँकि समुद्री जीवन बहुत कठिन था, फिर भी उसमें कभी-कभी कुछ अलग घटनाएँ भी हो जाती थीं। यात्रा के दौरान तीन बच्चों का जन्म हुआ और एक बूढ़े व्यक्ति की मृत्यु हो गई। कई दिनों तक कोई न कोई वायलिन या बाँसुरी बजाने लगता और दूसरे लोग उसके साथ गाना गाने लगते। कभी-कभी तो कुछ लोग जहाज़ के डेक पर नाचने की भी कोशिश करते।

समुद्र में पूरे बयालीस दिन बिताने के बाद आखिर एक दिन दूर ज़मीन दिखाई दी। धीरे-धीरे जहाज़ न्यूयॉर्क के बंदरगाह में पहुँचने लगा। खाड़ी में दुनिया के अलग-अलग देशों से आए अनगिनत पाल वाले जहाज़ खड़े थे।

लोब रेलिंग पकड़कर आगे झुक गया। वह भीड़ में अपने भाइयों को ढूँढ़ने की कोशिश कर रहा था। लेकिन घाट पर खड़े लोगों की भारी भीड़ में उसे वे कहीं दिखाई नहीं दिए।

भीड़ के पीछे चार और पाँच मंज़िल वाली ऊँची-ऊँची इमारतें खड़ी थीं। बटनहाइम के किसी भी घर से वे कहीं ज़्यादा ऊँची थीं। शहर से दूर खेतों में गायें आराम से चर रही थीं।

लोब को लगा जैसे जहाज़ को घाट तक पहुँचने में कई घंटे लग गए हों। आखिरकार जहाज़ से उतरने के लिए लकड़ी का पुल लगा दिया गया और सभी यात्री एक-एक करके नीचे उतरने लगे।

जहाज़ से उतरते समय कप्तान हर यात्री का नाम जाँच रहा था। उसका काम था कि सभी यात्रियों की अंतिम सूची अमेरिका की सरकार को भेजे।

लोब भी अपने परिवार और दूसरे यात्रियों के साथ कतार में खड़ा था। जब उसकी बारी आई, तो वह आगे बढ़ा और कप्तान को अपना नाम बताया।

कप्तान ने अपनी सूची देखी और ज़ोर से एक नाम पुकारा। वह नाम "लेवी" जैसा सुनाई दिया।

लोब हैरान रह गया। क्या अब से लोग उसे लेवी कहकर बुलाएँगे?

उसे याद आया कि उसने कई लोगों की कहानियाँ सुनी थीं, जो अमेरिका पहुँचने के बाद नए नामों से जाने जाने लगे थे। कप्तान ने उसकी बहनों, मायला और वोगेला, को भी नए नाम दिए थे—मैरी और फैनी।

लोब ने मन ही मन अपने नए नाम के बारे में सोचा—लेवी। उसे यह नाम अच्छा लगा। वह अमेरिका को अपना नया घर बनाना चाहता था। उसने तय कर लिया कि अगर यहाँ लोग उसे लेवी कहकर बुलाना चाहते हैं, तो अब से वह भी अपने आपको लेवी ही कहेगा।

लेवी अपने परिवार के साथ जहाज़ से उतरकर किनारे आ गया। वे भीड़-भाड़ वाले बंदरगाह से निकलकर एक ऐसी सड़क पर पहुँचे, जहाँ चारों ओर लोगों की चहल-पहल थी। हाथगाड़ियों पर सामान बेचने वाले दुकानदार हर तरह की चीज़ें बेच रहे थे। हर कोई दूसरे से भी ज़्यादा ज़ोर से आवाज़ लगा रहा था।

"सेब ले लो!"
"फूल ले लो!"
"जूते ले लो!"

लेवी उन अंग्रेज़ी शब्दों का अर्थ नहीं समझ पा रहा था। उसे ऐसा लग रहा था, मानो वह शब्दों के किसी विशाल समुद्र में डूबता जा रहा हो।

तभी दूर से किसी ने उसके पुराने बवेरियाई नाम से पुकारा, "लोब!"

वह चौंककर इधर-उधर देखने लगा। तभी उसने अपने दोनों सौतेले भाइयों, लुई और जोनास, को अपनी ओर दौड़ते हुए देखा।

दोनों उत्साह से जर्मन और हिब्रू भाषा में उससे बातें करने लगे। ये दोनों भाषाएँ लेवी अच्छी तरह समझता था। भाइयों ने खुशी-खुशी पूरे परिवार को गले लगा लिया।

उन्होंने बताया कि उन्होंने महिलाओं के रहने का इंतज़ाम कर दिया है। न्यूयॉर्क के लोअर ईस्ट साइड में रहने वाले कुछ रिश्तेदार उन्हें कुछ समय के लिए अपने घर में रखने को तैयार थे। लेवी अपने भाइयों के साथ फेरीवालों के एक किराए के मकान में रहेगा।

लुई और जोनास परिवार को शहर घुमाने ले गए। घूमते हुए लेवी ने देखा कि कुछ सड़कों पर सोने की नहीं, बल्कि पत्थरों की मज़बूत पट्टियाँ बिछी हुई थीं।

वह मुस्कराया और मन ही मन बोला, "चलो, कम-से-कम ये सड़कें कीचड़ से तो नहीं भरी हैं।"

2
फेरीवाला

फेरीवालों के रहने वाले मकान में लेवी और उसके भाइयों को रोज़ एक अच्छा भोजन मिलता था, सोने के लिए एक बिस्तर मिलता था और नहाने-धोने की भी सुविधा थी। हर व्यक्ति को इसके लिए महीने के तीन डॉलर किराया देना पड़ता था।

लेवी के पास बहुत कम पैसे थे। यह कोई हैरानी की बात नहीं थी। उस समय ज़्यादातर प्रवासी अमेरिका केवल लगभग बीस डॉलर लेकर ही पहुँचते थे।

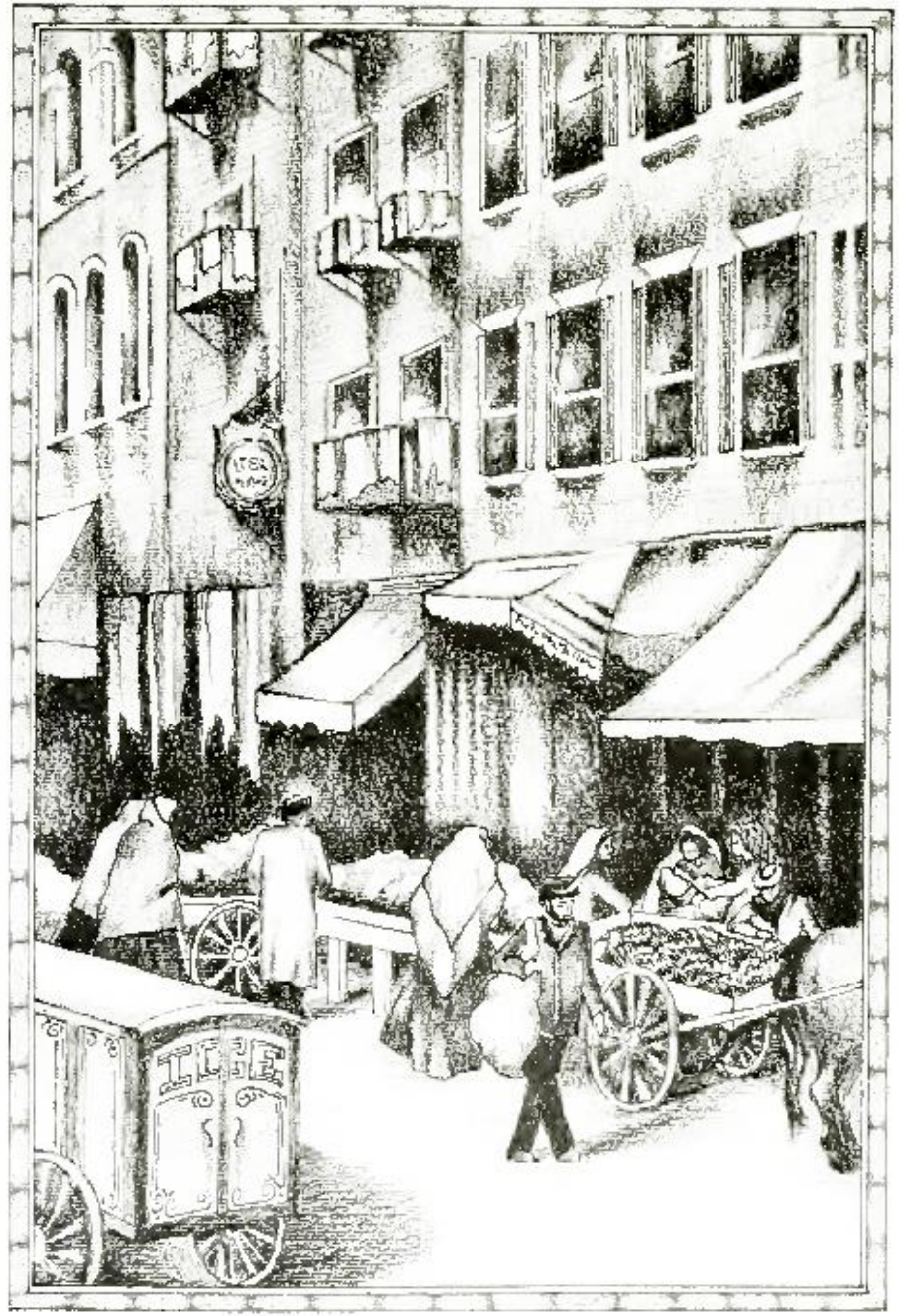
सौभाग्य से लेवी के दोनों भाई, लुई और जोनास, फेरी लगाकर कुछ पैसे कमा चुके थे। वे चाहते थे कि लेवी भी अपना काम शुरू करे, इसलिए उन्होंने उसकी मदद की। उन्होंने उसे बेचने के लिए पहला सामान खरीदकर दिया।

हर सुबह लेवी लगभग पचास पाउंड (करीब तेईस किलोग्राम) वज़न वाला अपना भारी थैला कंधे पर लादकर न्यूयॉर्क की सड़कों पर निकल पड़ता। वह घर-घर और गली-गली घूमकर सुइयाँ, पिन, रिबन और कपड़ा बेचने की कोशिश करता।

शुरुआत में तो उसे अपने सामान के अंग्रेज़ी नाम भी नहीं आते थे। इसलिए वह बस अपना थैला खोलकर कह देता,

"सामान खरीद लीजिए!"

रास्ते से गुज़रने वाले लोग रुक जाते, उसका सामान देखते और अपनी ज़रूरत की कोई चीज़ चुन लेते। फिर वे उसकी हथेली पर कभी एक पेनी, कभी एक निकेल (पाँच सेंट का सिक्का) और कभी एक डाइम (दस सेंट का सिक्का) रख देते।



"धन्यवाद," लेवी इतना अंग्रेज़ी में कहना सीख चुका था।

लेकिन जर्मन और हिब्रू मिली-जुली भाषा से अंग्रेज़ी बोलना सीखने में उसे ज़्यादा समय नहीं लगा। धीरे-धीरे उसने पैसे गिनना, बाकी रकम लौटाना और फेरीवालों के नक्शे पढ़ना सीख लिया। अब वह अपने नए नाम—लेवी स्ट्रॉस—को सुनने का भी आदी हो गया था।

हर दिन काम खत्म होने तक उसकी पीठ दर्द करने लगती और पैरों में छाले पड़ जाते। लेकिन कुछ ही समय में उसने अपने भाइयों का सारा पैसा लौटा दिया और अपनी कमाई भी शुरू कर दी।

न्यूयॉर्क शहर में व्यापारी और फेरीवाले बहुत ज़्यादा थे। लेवी समझ गया कि जहाँ बेचने वाले कम होंगे, वहाँ सामान ज़्यादा बिकेगा। इसलिए एक साल के भीतर ही वह न्यूयॉर्क शहर से बाहर भी जाने लगा। वह दूर-दूर के कस्बों, यहाँ तक कि पेलहैम नामक नगर तक पहुँचकर सामान बेचने लगा।

देहात में फेरी लगाना शहर की तुलना में कहीं ज़्यादा कठिन था। वहाँ उसे लंबी-लंबी दूरियाँ पैदल तय करनी पड़ती थीं और पहले से भी अधिक भारी सामान ढोना पड़ता था।

ग्रामीण इलाकों में घूमने वाले फेरीवाले अपने साथ दो बड़े थैले रखते थे। एक लगभग सौ पाउंड (करीब 45 किलोग्राम) का थैला उनकी पीठ पर होता था और दूसरा लगभग अस्सी पाउंड (करीब 36 किलोग्राम) का थैला उनके सीने से बँधा रहता था।

उन्हें तरह-तरह का सामान साथ रखना पड़ता था, क्योंकि पहले से यह पता नहीं होता था कि किसानों को किस चीज़ की ज़रूरत पड़ जाए। और चूँकि वे हर शाम शहर वापस नहीं लौटते थे, इसलिए उन्हें पूरे एक सप्ताह तक बेचने लायक सामान अपने साथ लेकर चलना पड़ता था।

चलते-चलते लेवी अपने साथ वही कई चीज़ें बेचता था, जो वह पहले न्यूयॉर्क शहर में बेचा करता था—पिन, रिबन और धागा। लेकिन इसके साथ-साथ वह बर्तन, तवे, फावड़े और कुदाल भी लेकर चलता था, ठीक वैसे ही जैसे कभी बुटेनहाइम में बेचा करता था।

एक मज़ेदार बात यह थी कि जितना ज़्यादा सामान वह बेचता, उसका बोझ उतना ही बढ़ जाता। ऐसा इसलिए क्योंकि कई बार लोग उसे पैसे देने के बजाय अनाज की बोरियाँ, शहद के डिब्बे या शीरे (गुड़ का गाढ़ा रस) के डिब्बे दे देते थे।

देहात में फेरी लगाना बिल्कुल आसान नहीं था। सर्दियों में लेवी इतनी घनी बर्फ़बारी के बीच चलता था कि उसे सड़क का रास्ता तक दिखाई नहीं देता था। वसंत ऋतु में उसे टखनों तक कीचड़ से भरे रास्तों पर चलना पड़ता था। कई बार उसे डर लगता था कि कहीं उसके जूतों का बचा-खुचा हिस्सा भी कीचड़ में न फँस जाए।

अधिकतर दिनों में उसे यह भी नहीं पता होता था कि रात को वह कहाँ सोएगा। कभी कोई दयालु किसान उसे अपने खलिहान या अस्तबल में रात बिताने की जगह दे देता था। लेकिन अगर ऐसा न होता, तो उसे जंगल में किसी पेड़ के नीचे या सड़क के किनारे ही रात गुज़ारनी पड़ती थी।

फिर भी देहात में फेरी लगाने के कुछ फायदे भी थे। शहर की तरह वहाँ शरारती लड़के उस पर पत्थर नहीं फेंकते थे और न ही कोयले के टुकड़े भरकर बर्फ़ के गोले मारते थे। उसे यह डर भी नहीं रहता था कि किसी अँधेरी गली में कोई उस पर हमला करके उसका सामान और पैसे लूट लेगा।

इसके बजाय गाँव के लोग उसका स्वागत करते थे, क्योंकि वह आसपास के दूसरे गाँवों की नई-नई खबरें भी अपने साथ लेकर आता था।

न्यूयॉर्क राज्य की धूल भरी पगडंडियों और दलदली रास्तों पर चलते-चलते लेवी अक्सर सोचता था कि अमेरिका का बाकी हिस्सा कैसा होगा। जल्द ही उसे यह जानने का अवसर मिल गया।

सन् 1848 में लेवी को पता चला कि उसका एक रिश्तेदार लुईविल, केंटकी में आकर बस गया है। यह खबर मिलते ही उसने अपने परिवार से विदा ली और पैदल ही अपने उस नए रिश्तेदार से मिलने निकल पड़ा।

यात्रा लंबी थी, लेकिन आखिरकार वह केंटकी पहुँच गया। उस समय केंटकी अमेरिका का एक नया और कम बसा हुआ सीमांत प्रदेश माना जाता था। अगले पाँच वर्षों तक लेवी वहीं रहा। वह एपलाचियन पर्वतमाला की तलहटी के गाँवों और कस्बों में घूम-घूमकर अपना सामान बेचता रहा।

केंटकी के लोग मिलनसार थे और लेवी के साथ सम्मान का व्यवहार करते थे। उनके स्नेह के बदले लेवी भी अक्सर घर की महिलाओं और उनकी बेटियों को एक पैसे में दो रील धागा या पिन का एक छोटा पैकेट उपहार में दे देता था।

कभी-कभी कोई परिवार उसे अपने साथ भोजन करने के लिए भी बुला लेता था। लेवी खुशी-खुशी उनका निमंत्रण स्वीकार कर लेता, चाहे भोजन हमेशा यहूदी धार्मिक नियमों के अनुसार बना हुआ न भी हो।

हर रात, चाहे उसे किसी पेड़ के नीचे सोना हो या किसी किसान के खलिहान में, वह सबसे पहले अपने इकलौते मोज़ों की जोड़ी धोता था। यह पुराने समय के फेरीवालों की एक परंपरा थी, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही थी।

मोज़े धोकर वह उन्हें सूखने के लिए टाँग देता और मन ही मन उम्मीद करता कि सुबह तक वे अच्छी तरह सूख जाएँ। अगर वे गीले रह जाते, तो उसे वही भीगे हुए मोज़े पहनकर पूरे दिन अपने जूतों में चलना पड़ता।



लेकिन अमेरिका आने के बाद यह पहली बार नहीं था कि लेवी को भीगे पैरों के साथ चलना पड़ रहा हो।

सन् 1848 से 1852 तक, जब लेवी केंटकी में फेरी लगाकर सामान बेच रहा था, उसी समय उसके भाई न्यूयॉर्क शहर में घरेलू सामान की दुकान चला रहे थे। सन् 1848 की न्यूयॉर्क शहर की व्यापार निर्देशिका में जोनास स्ट्रॉस का नाम 203½ डिवीज़न स्ट्रीट पर स्थित एक दुकान के मालिक के रूप में दर्ज था। सन् 1851 तक दोनों भाई एक बड़ी दुकान में, 165 ह्यूस्टन स्ट्रीट, पर अपना कारोबार ले गए थे।

उन्होंने लेवी को कई पत्र लिखे और उसे वापस न्यूयॉर्क आकर उनके साथ काम करने के लिए बुलाया।

हालाँकि फेरी लगाना कठिन काम था, फिर भी लेवी न्यूयॉर्क लौटना नहीं चाहता था। उसकी नज़र अब एक दूसरे शहर पर थी—सैन फ़्रांसिस्को।

उसी समय कैलिफ़ोर्निया में सोना मिलने की खबर पूरे अमेरिका में फैल चुकी थी। लोग इसे स्वर्ण-उन्माद (गोल्ड रश) कहने लगे थे। लेवी ऐसे बहुत-से लोगों के बारे में जानता था जो सोना खोजने कैलिफ़ोर्निया गए थे। उनमें से कई लोग निराश होकर लौट आए थे। कुछ का तो फिर कभी कोई पता ही नहीं चला। लेकिन कुछ लोग सचमुच बहुत अमीर बन गए थे।

लेवी की बहन फैनी ने भी उसे सैन फ़्रांसिस्को से पत्र लिखा। वह और उसके पति डेविड स्टर्न अभी कुछ ही समय पहले वहाँ पहुँचे थे। इस नए विवाहित दंपती ने सोने की खोज के कारण तेजी से बढ़ते उस शहर में अपना व्यापार शुरू करने का फैसला किया था। वे चाहते थे कि लेवी भी उनके साथ आ जाए।

लेवी जानता था कि कैलिफ़ोर्निया जाना एक बड़ा जोखिम भरा काम था। लेकिन वह यह भी जानता था कि कभी अमेरिका आना भी एक जोखिम ही था।

लेवी ने मन ही मन सोचा, "जोखिम उठाओ। अगर कोशिश ही नहीं करोगे, तो कभी यह नहीं जान पाओगे कि तुमने क्या खो दिया।"

शायद सैन फ़्रांसिस्को में जाकर उसे सचमुच वे प्रसिद्ध "सोने की सड़कें" देखने को मिल जाएँ, जिनकी कहानियाँ वह बचपन से सुनता आया था।

3
केप हॉर्न का लंबा समुद्री सफ़र

सन् 1852 के अंत या 1853 की शुरुआत में लेवी अपने परिवार से विदा लेने के लिए फिर से न्यूयॉर्क शहर लौटा।

कुछ दिन परिवार के साथ बिताने के बाद वह अपना फेरीवाले वाला थैला लेकर न्यूयॉर्क बंदरगाह की ओर चल पड़ा। इस बार उसके थैले में खनिकों के तंबू बनाने के लिए मोटे कैनवास के कपड़े के बड़े-बड़े थान थे। इसके अलावा उसने ऐसी कई दूसरी चीज़ें भी रखी थीं, जिनकी ज़रूरत उसे लगा कि सैन फ्रांसिस्को के लोगों को पड़ सकती है।

इस बार की समुद्री यात्रा में लेवी बिल्कुल अकेला था। लेकिन उसे लगा कि अब ऐसा होना ही चाहिए। आखिर वह चौबीस साल का हो चुका था। अब वह अमेरिका में नया-नया आया अनुभवहीन युवक नहीं रहा था।

लेवी के दोनों भाई उसे विदा करने बंदरगाह तक आए। उन्होंने उसे फेरीवाले की कठिन ज़िंदगी याद दिलाई और समझाया कि वह न्यूयॉर्क में ही रुक जाए और उनके साथ दुकान में काम करे। लेकिन लेवी अपना फैसला कर चुका था। वह अमेरिका के पश्चिमी तट पर जाना चाहता था, जहाँ कैलिफ़ोर्निया में सोना खोजने आए लोगों को अपना सामान बेच सके।

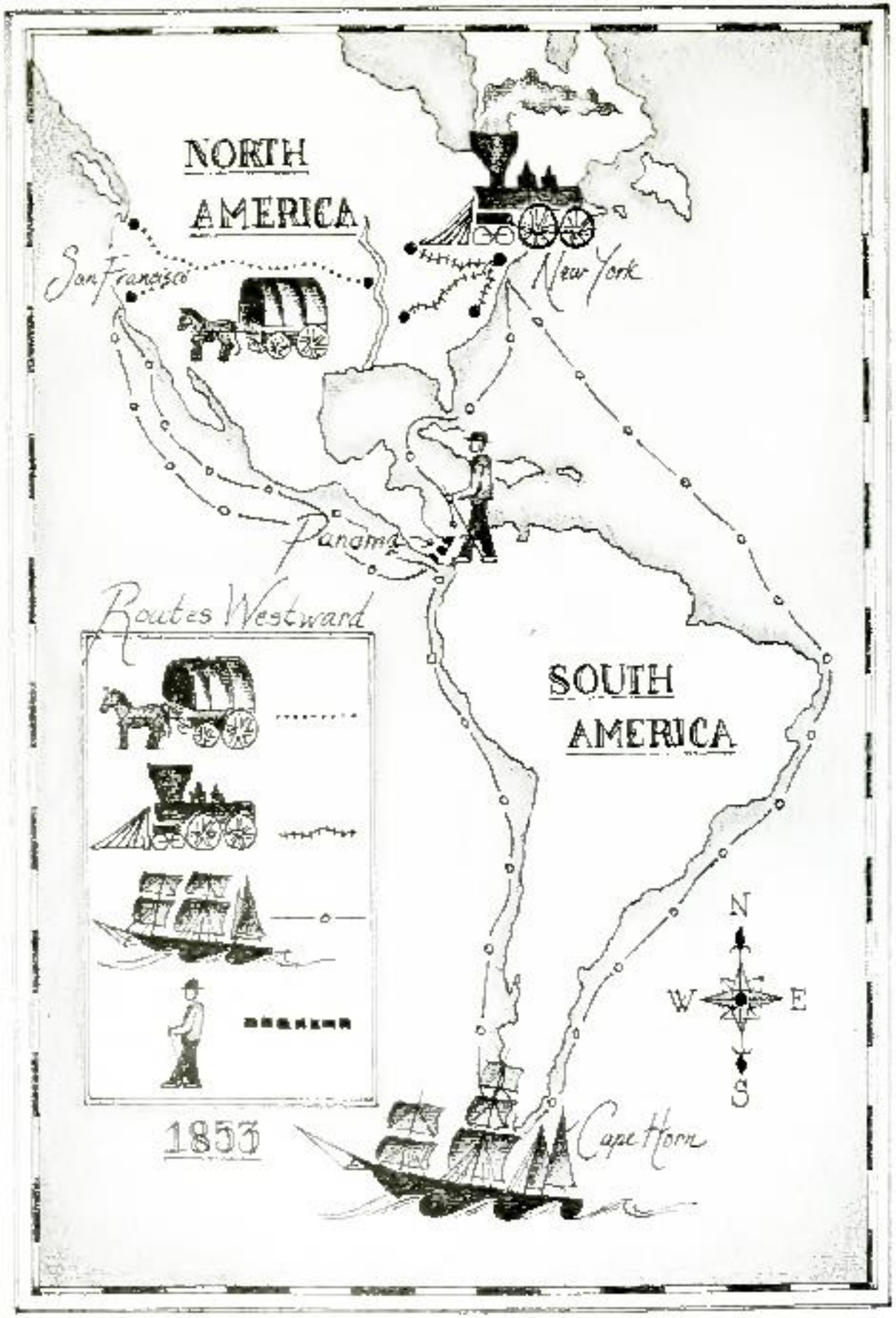
गाना गाते लोगों और हाथ हिलाकर विदा देने वालों के बीच लेवी तेज़ रफ़्तार वाले क्लिपर जहाज़ पर सवार हो गया। कड़ाके की सर्दी की हवा उसके चेहरे और हाथों पर चुभ रही थी, फिर भी वह किनारे पर खड़े अपने परिवार की ओर हाथ हिलाता रहा।

उसके मन में एक सवाल बार-बार उठ रहा था—क्या वह अपने परिवार से फिर कभी मिल पाएगा?

हो सकता है कि दक्षिण अमेरिका के केप हॉर्न के चारों ओर होने वाली यह लंबी समुद्री यात्रा वह पूरी ही न कर सके। शायद यह मज़बूत दिखने वाला जहाज़ भी रास्ते में किसी तूफ़ान का सामना न कर पाए। उसने ऐसे बहुत-से लोगों की कहानियाँ सुन रखी थीं, जो कैलिफ़ोर्निया के सोने के क्षेत्रों की ओर निकले थे, लेकिन कभी वहाँ पहुँच ही नहीं सके। कई लोग हैज़ा, मलेरिया या दूसरी बीमारियों से रास्ते में ही मर गए थे।

फिर भी उस समय अमेरिका के पूर्वी तट से पश्चिमी तट तक पहुँचने का सबसे भरोसेमंद रास्ता समुद्री यात्रा ही माना जाता था। उस समय ऐसी कोई रेल लाइन नहीं थी जो मिसिसिपी नदी और रॉकी पर्वतमाला को पार करके दोनों तटों को जोड़ती हो।

दूसरा रास्ता ओरेगन–कैलिफ़ोर्निया ट्रेल से होकर जाता था। लेकिन उस मार्ग पर यात्रियों को पहले लगभग एक हज़ार मील तक विशाल मैदानों में पैदल चलना पड़ता था और फिर लगभग एक हज़ार मील तक और भी कठिन पहाड़ी और ऊबड़-खाबड़ इलाकों से होकर गुजरना पड़ता था।



फिर भी समुद्र का रास्ता न तो छोटा था और न ही आसान।

उस समय मध्य अमेरिका में कोई नहर नहीं थी। इसलिए जहाज़ों को दक्षिण अमेरिका के सबसे दक्षिणी सिरे, यानी केप हॉर्न, का चक्कर लगाकर फिर उत्तर की ओर पूरे पश्चिमी तट के साथ-साथ चलना पड़ता था। तभी वे कैलिफ़ोर्निया पहुँच पाते थे।

एक दूसरा रास्ता भी था। यात्री पहले जहाज़ से पनामा तक जाते, फिर पैदल पूरे स्थल-भाग को पार करके दूसरी तरफ पहुँचते और वहाँ से दूसरा जहाज़ पकड़ते। लेकिन लेवी को यह रास्ता बिल्कुल पसंद नहीं आया।

लेवी जहाज़ के निचले हिस्से में गया, जहाँ उसे अगले चार महीनों तक रहना था। उसने वहाँ एक बड़े कमरे में अपने सोने की जगह के लिए 250 डॉलर दिए थे। उस कमरे में पचास एक जैसे बिस्तर लगे हुए थे।

वे बिस्तर उसे बवेरिया से अमेरिका की पहली समुद्री यात्रा की याद दिला रहे थे। वे पहले वाले लकड़ी के तख्तों से बस थोड़े ही चौड़े थे। लेवी मन ही मन यही प्रार्थना कर रहा था कि इस बार उसे समुद्री बीमारी न हो। लेकिन वह जानता था कि यह फैसला उसकी इच्छा नहीं, बल्कि उसका पेट करेगा।

लेवी अकेला नहीं था, जो सोने की चमक से भरे पहाड़ी झरनों का सपना लेकर यात्रा कर रहा था। उसके साथ जहाज़ में लगभग डेढ़ सौ और यात्री भी थे। उनमें ज़्यादातर पुरुष थे।

उन यात्रियों में डॉक्टर, व्यापारी, किसान, जहाज़ों के कप्तान, एक पादरी, एक भूवैज्ञानिक और लेवी जैसे कई फेरीवाले भी शामिल थे।

चार साल पहले जब लोगों ने कैलिफ़ोर्निया में सोने की खोज शुरू की थी, तब से यह खबर न्यूयॉर्क तक पहुँच चुकी थी कि सोना पाने वाले लोगों को अपना पैसा खर्च करने के लिए तरह-तरह का सामान भी चाहिए। इसलिए लेवी अकेला नहीं था, जो इस नए व्यापारिक अवसर का लाभ उठाना चाहता था।

जहाज़ पर दिन तेज़ी से बीतने लगे।

शुरुआत में लेवी को अपने कुछ साथी यात्री बहुत रूखे और डरावने लगे थे। लेकिन धीरे-धीरे उसे महसूस हुआ कि वे इतने बुरे भी नहीं थे। कुछ लोगों को देखकर—और उनकी गंध से—ऐसा लगता था, मानो उन्होंने कभी ठीक से नहाया ही न हो। कुछ इतने ज़ोर-ज़ोर से बोलते थे कि उनकी आवाज़ जहाज़ के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सुनाई देती थी। कुछ लोग बातों से ज़्यादा अपने मुक्कों का इस्तेमाल करना जानते थे।

लेकिन ज़्यादातर यात्री शांत स्वभाव के थे। वे बैठकर बातें करते, किताबें पढ़ते या समय बिताने के लिए खेल खेलते थे। एक-दो लोग अपने साथ बैकगैमॉन, शतरंज और चेकर्स जैसे खेल भी लाए थे। वे अक्सर लेवी को भी अपने साथ खेलने के लिए बुलाते थे।

कुछ ही दिनों में लेवी अपनी माँ के दिए हुए खाने का सारा सामान खा चुका था। अब उसके पास जहाज़ का खाना खाने के अलावा कोई दूसरा उपाय नहीं था।

जहाज़ पर सबसे आम भोजन लॉबस्काउस नाम का एक व्यंजन था। यह आलू, नमक में सुरक्षित रखा गया गोमांस या सूअर का मांस और बहुत सख्त रोटी मिलाकर बनाया जाता था। यह ऊपर से चर्बी से भरा हुआ दिखाई देता था, फिर भी लेवी उसे खा लेता था।

वह सोचता, "इससे भी बुरा हो सकता है।"

यात्रियों के बीच ऐसी कहानियाँ भी सुनने को मिलती थीं कि किसी दूसरे जहाज़ पर लोगों को कीड़ों वाला दलिया, घुन लगा आटा और ऐसी फलियाँ खाने को मिली थीं जिनमें हर दाने के साथ दो-दो कीड़े निकले थे।

इसलिए लेवी ने तय कर लिया कि जब तक उसका पेट विरोध नहीं करता, वह चुपचाप लॉबस्काउस ही खाता रहेगा।

कभी-कभी समुद्र भी खाने में थोड़ा बदलाव ले आता था।

एक बार की बात है। जहाज़ के कप्तान ने एक छोटी-सी शार्क मछली पकड़ ली और उसे रात के खाने के लिए पकाने का आदेश दिया। जब एक यात्री ने इसका विरोध किया, तो कप्तान हँसकर बोला, "इसे खा लो। अगर तुम कभी समुद्र में गिर गए, तो यह तुम्हें खाने में ज़रा भी देर नहीं करेगी।"

कभी-कभी जहाज़ रास्ते में रुकता भी था, ताकि पानी के खाली पीपों को फिर से भर लिया जाए। ऐसे मौकों पर यात्रियों को दक्षिण अमेरिका के अनोखे फलों का स्वाद चखने का अवसर मिलता था। वहाँ उन्हें अनानास, आम और पपीता जैसे फल मिलते थे।

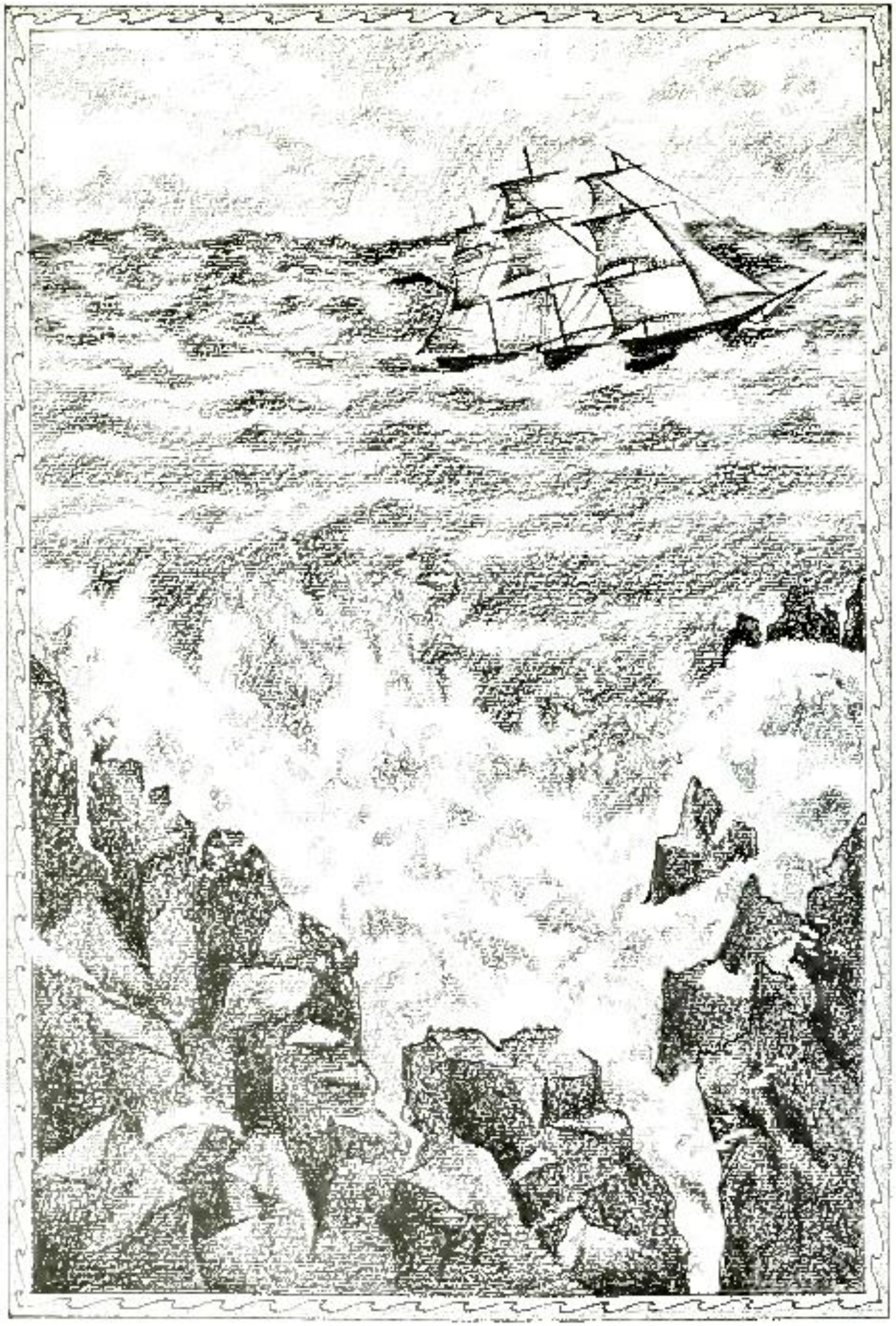
लेवी ने पहले कभी ऐसे स्वादिष्ट और अनोखे फल नहीं खाए थे। उसने जितने आम और पपीते उठा सकता था, उतने खरीद लिए। वह सोच रहा था कि सैन फ्रांसिस्को पहुँचकर अपनी बहन फैनी और उसके पति को ये फल देकर चौंका देगा। लेकिन गर्मी के कारण वे फल रास्ते में ही भूरे पड़ गए और सड़ गए। इससे लेवी को बहुत निराशा हुई।

पूरी यात्रा का सबसे कठिन हिस्सा केप हॉर्न का चक्कर लगाना था।

वहाँ समुद्र की ऊँची-ऊँची लहरें जहाज़ को ज़ोर-ज़ोर से इधर-उधर झुला रही थीं। पानी की बड़ी-बड़ी लहरें जहाज़ के दोनों किनारों से टकराकर ऊपर तक आ जातीं और डेक पर खड़े लोगों को पूरी तरह भिगो देतीं।

यात्रियों और नाविकों—दोनों को—जहाज़ की रस्सियों को मज़बूती से पकड़कर खड़ा रहना पड़ता था। ज़रा-सी लापरवाही उन्हें समुद्र में बहा सकती थी।

उधर नाविक मूसलाधार बारिश, तेज़ हवाओं और उफनती लहरों से जूझते हुए जहाज़ को केप हॉर्न की नुकीली और खतरनाक चट्टानों के बीच से सुरक्षित निकालने की पूरी कोशिश कर रहे थे।



सौभाग्य से उस समय दक्षिणी गोलार्ध में गर्मी का मौसम था। इसलिए जहाज़ को बर्फ़ या ओलों के तूफ़ान का सामना नहीं करना पड़ा। लेवी खुश था कि उसने जुलाई की बजाय जनवरी में यह यात्रा करने का फैसला किया था।

लेकिन जैसे केप हॉर्न की ओर जाते समय हुआ था, वैसे ही भूमध्य रेखा के पास पहुँचते ही भीषण गर्मी पड़ने लगी। फेरीवाले के रूप में उसने कभी इतनी तेज़ गर्मी नहीं झेली थी।

जहाज़ के निचले हिस्से में तो हवा बिल्कुल नहीं चलती थी, इसलिए वहाँ रहना मुश्किल हो जाता था। ऊपर डेक पर थोड़ी-बहुत हवा ज़रूर मिल जाती थी, लेकिन तेज़ धूप लगातार सिर पर बरसती रहती थी। उससे बचने के लिए कहीं कोई छाया नहीं थी।

लेवी नीचे ठंडे समुद्र के पानी की ओर देखता और मन ही मन सोचता, "काश! मैं इसमें कूदकर मछलियों के साथ तैर पाता।"

एक सुबह उसकी नींद ठंडी हवा के झोंके से खुली। रात को वह केवल अपने अंतःवस्त्र पहनकर सोया था। अब उसने जल्दी से पतला कंबल अपने गले तक खींच लिया। धूप से झुलसा उसका शरीर ठंड से काँप रहा था।

तभी उसके कानों में वे शब्द पड़े, जिनका वह कई दिनों से इंतज़ार कर रहा था—

"ज़मीन दिखाई दे रही है!"

लेवी तुरंत बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। उसने अपनी ऊनी पतलून पहनी और अपनी अच्छी कमीज़ों में से एक निकालकर पहन ली। वह अपनी बहन फैनी के नए पति, व्यापारी डेविड स्टर्न, पर अच्छा प्रभाव डालना चाहता था।

4
मज़बूत पतलूनें

लेवी जहाज़ की रेलिंग के पास लोगों के बीच जगह बनाकर खड़ा हो गया। वह उस शहर को ध्यान से देख रहा था, जिसे अब वह अपना नया घर बनाने वाला था।

सुबह की सुनहरी रोशनी में ऊबड़-खाबड़ चट्टानें और हरी-भरी पहाड़ियाँ सुनहरे रंग में चमक रही थीं। इधर-उधर ऊँचे देवदार के पेड़ खड़े थे और खाड़ी में कई पुराने, छोड़ दिए गए जहाज़ों के मस्तूल दिखाई दे रहे थे।

आखिर जहाज़ बंदरगाह के लंबे लकड़ी के घाट, लॉन्ग व्हार्फ, के पास आकर रुक गया। यह घाट समुद्र के भीतर तक बना हुआ था।

थोड़ी ही देर में छोटी-छोटी नावों में कई लोग जहाज़ तक आ पहुँचे और फुर्ती से उस पर चढ़ गए। वे यह देखने आए थे कि यात्रियों के पास बेचने के लिए क्या-क्या सामान है।

लेवी ने तुरंत अपने थैले से कैनवास के कपड़े का एक बड़ा थान निकाला और उसमें से लंबे-लंबे टुकड़े काटकर बेचने लगा। बदले में लोगों ने उसकी हथेली पर सोने के छोटे-छोटे टुकड़े रख दिए।

फिर उसने अपने थैले से दूसरा सामान भी निकालना शुरू किया। सोना खोजने आए खनिक उसकी हर चीज़ खरीदने के लिए उतावले थे। केंटकी में जिन सुइयों के लिए उसे केवल पच्चीस सेंट मिलते थे, उन्हीं सुइयों के बदले यहाँ खनिक उसे दो डॉलर के बराबर सोना दे रहे थे।

लेवी ने कभी नहीं सोचा था कि सोना कमाना इतना आसान भी हो सकता है।

जब तक जहाज़ पूरी तरह घाट पर लगा, तब तक लेवी अपना ज़्यादातर सामान बेच चुका था।

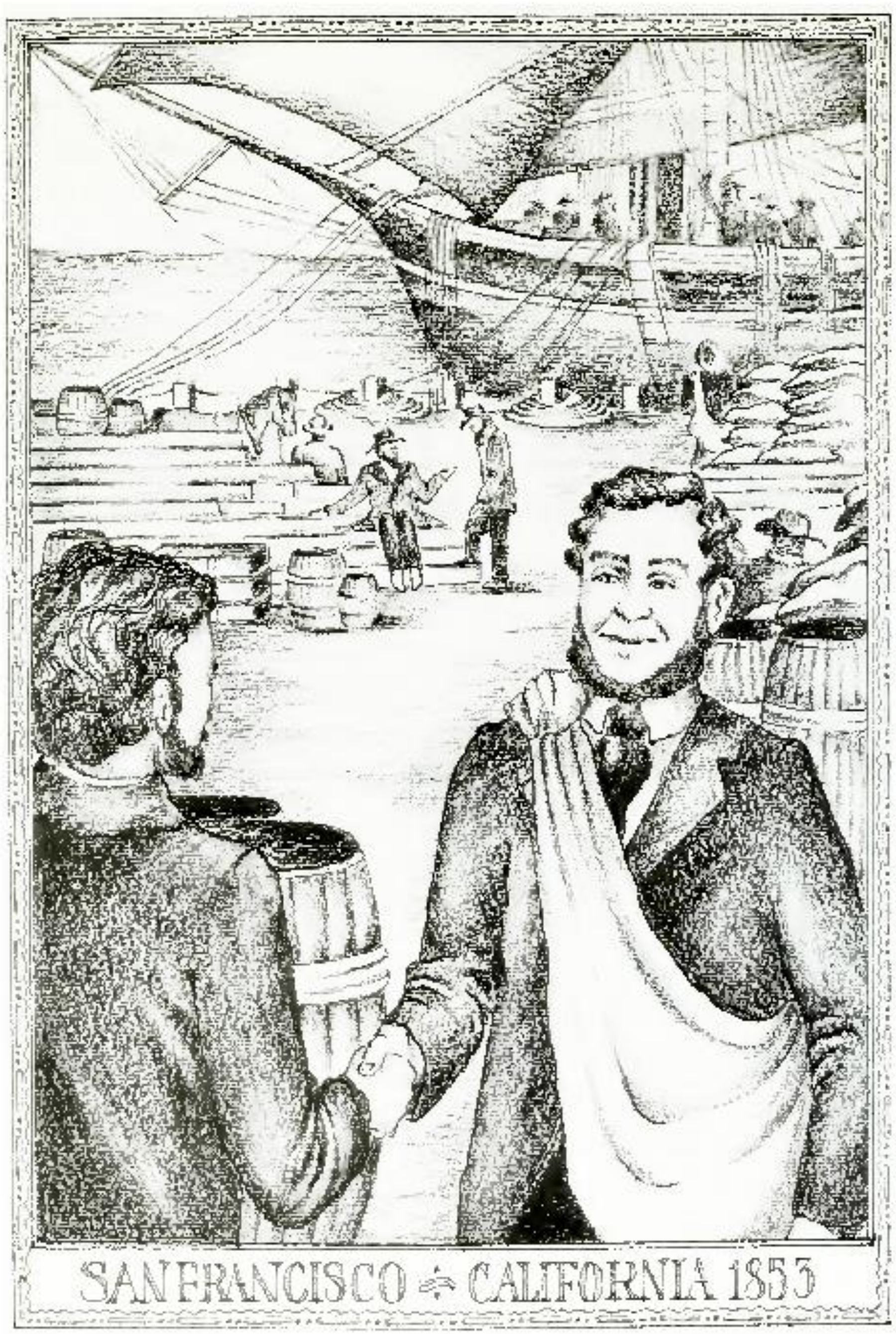
वह जहाज़ से उतरकर फैनी और डेविड का इंतज़ार करने लगा। पूरे घाट पर सोना खोजने वाले लोग नए आए यात्रियों को रोक-रोककर पूछ रहे थे कि क्या उनके पास बेचने के लिए क्यूबा के सिगार, छोटे पैकेटों में तंबाकू या हवा-बंद डिब्बों में रखे बीज हैं।

एक नए यात्री ने तो अपने पैरों में पहने हुए जूते तक बेच दिए और उनसे अच्छी-खासी कमाई कर ली। अब वह केवल मोज़े पहनकर खड़ा था और लोगों को यह मज़ेदार घटना सुना रहा था।

यह सब देखकर लेवी मन ही मन सोचने लगा, "कैलिफ़ोर्निया के लोग तो हर चीज़ खरीदने को तैयार हैं। यहाँ सामान बेचना तो बिल्कुल भी मुश्किल नहीं होगा।"

थोड़ी ही देर बाद एक लंबा, काले बालों वाला व्यक्ति मुस्कराते हुए उसकी ओर आया और हाथ बढ़ाकर उसका स्वागत किया। लेवी समझ गया कि यही उसकी बहन फैनी के पति, डेविड स्टर्न, हैं।

डेविड ने बताया कि फैनी ने घर पर उसके लिए खाना तैयार कर रखा है। फिर दोनों पहाड़ी पर बने घर की ओर पैदल चल पड़े।



लेवी चारों ओर देखकर हैरान रह गया।

सुबह का समय था, लेकिन जुए के अड्डों से पियानो की धुनें और लोगों के ऊँचे-ऊँचे गीतों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। कच्ची सड़कों पर गहरी खाइयाँ बनी हुई थीं और उन पर बैलगाड़ियाँ और घोड़ा-गाड़ियाँ उछलती-कूदती चल रही थीं। पैदल चलने वालों के लिए लकड़ी के तख्तों से बने रास्ते थे। बहुत कम चौराहों पर सड़क की बत्तियाँ लगी थीं।

लेवी ने यह भी देखा कि शहर में लकड़ी की झोंपड़ियों जितने ही तंबू भी लगे हुए थे। कई मकान तो उन पालों (कैनवास के कपड़ों) से बनाए गए थे, जिन्हें पुराने और छोड़ दिए गए जहाज़ों से उतार लिया गया था।

सैन फ्रांसिस्को एक नया, तेज़ी से बढ़ता हुआ और कुछ अव्यवस्थित-सा शहर लग रहा था। लेवी ने मन ही मन सोचा, "एक व्यापारी के लिए यह बहुत रोमांचक जगह है, खासकर उस व्यापारी के लिए जो कपड़ा बेचता हो!"

उस शाम भोजन के बाद लेवी ने अपनी बहन और बहनोई को समुद्री यात्रा के दौरान हुए अपने रोमांचक अनुभव सुनाए। फिर फैनी और डेविड ने बारी-बारी से उसे सैन फ्रांसिस्को और सोने की खानों के शिविरों की कहानियाँ सुनाईं।

उन्होंने अफसोस के साथ कहा, "यह शहर अभी काफ़ी उग्र और असुरक्षित है। यहाँ लगभग हर दिन हत्या और लूटपाट की घटनाएँ होती रहती हैं।"

अगली सुबह लेवी अपने बहनोई डेविड स्टर्न के साथ उनकी घरेलू सामान की दुकान पर गया। यह दुकान सैक्रामेंटो स्ट्रीट के नीचे वाले हिस्से में थी।

रास्ते में डेविड ने उसे शहर के बारे में और भी बातें बताईं। उन्होंने अपने अनुमान के अनुसार कहा, "इस शहर में लगभग 4 आरा मिलें, 5 थिएटर, 23 घाट, 28 शराब बनाने के कारखाने, 117 घरेलू सामान की दुकानें और 399 शराबखाने हैं।"

फिर मुस्कराकर उन्होंने कहा, "और यह सब केवल अठहत्तर हज़ार लोगों के शहर में!"

लेवी ने मन ही मन सोचा, "वाह! यहाँ तो घरेलू सामान की दुकानों से भी ज़्यादा शराबखाने हैं।"

डेविड स्टर्न, सैन फ्रांसिस्को आने से पहले, सेंट लुइस में फेरी लगाकर सामान बेचा करते थे। वे 1851 में सैन फ्रांसिस्को आए थे और उनकी घरेलू सामान की दुकान अभी नई-नई ही थी। ऐसे समय में लेवी का वहाँ पहुँच जाना उनके लिए बहुत बड़ी मदद साबित हुआ।

असल में डेविड को दुकान के लिए कर्मचारी ही नहीं मिल रहे थे। अधिकांश नौजवान—यहाँ तक कि कई उम्रदराज़ लोग भी—सोना खोजने की उम्मीद में खानों की ओर चले गए थे।

सैन फ्रांसिस्को आने के कुछ ही हफ्तों बाद लेवी न केवल दुकान का एक महत्वपूर्ण सदस्य बन गया, बल्कि स्टर्न परिवार का भी हिस्सा जैसा हो गया।

सैक्रामेंटो स्ट्रीट की उस दुकान में लेवी स्ट्रॉस और डेविड स्टर्न का कारोबार तेजी से बढ़ने लगा। वे पतलून, कमीज़ें, कंबल, टिन की प्लेटें, प्याले और घर में काम आने वाली कई दूसरी चीज़ें बेचते थे।

कुछ सामान नदी के स्टीमर जहाज़ों और घोड़ा-गाड़ियों (स्टेजकोच) से आता था। लेकिन ज़्यादातर माल न्यूयॉर्क से तेज़ रफ़्तार क्लिपर जहाज़ों द्वारा भेजा जाता था। इनमें विशेष रूप से वे भारी कपड़ों के थान भी होते थे, जो लेवी के भाई न्यूयॉर्क से भेजते थे।

जब किसी जहाज़ के आने की उम्मीद होती, तो लेवी और डेविड दुकान के अंदर ही अलमारियों से उतारे गए कंबलों पर सो जाते थे। वे चाहते थे कि जहाज़ पहुँचते ही सबसे पहले अपना माल ले सकें।

कई बार वे एक लड़के को शहर की सबसे ऊँची इमारत या किसी ऊँची पहाड़ी पर खड़ा कर देते थे, ताकि वह दूर समुद्र पर नज़र रखे और आते हुए जहाज़ को सबसे पहले देख सके।

जैसे ही दूर समुद्र में जहाज़ दिखाई देता, लेवी और डेविड तुरंत दुकान में बचे हुए सामान के दाम कम कर देते। वे चाहते थे कि पुराना माल जितनी जल्दी हो सके बिक जाए, ताकि नए माल के लिए अलमारियों में जगह बन सके।

उधर जहाज़ के घाट पर पूरी तरह लगने से पहले ही लेवी बंदरगाह पहुँच जाता। वहाँ नए आए माल की नीलामी शुरू होने वाली होती। लेवी उत्साह से अलग-अलग सामान पर बोली लगाता, जबकि डेविड दुकान में रहकर पुराने सामान की कीमतें कम करने का काम जारी रखते।

सन् 1856 तक उनका कारोबार इतना बढ़ गया कि सैक्रामेंटो स्ट्रीट वाली दुकान छोटी पड़ने लगी। अब लेवी केवल कर्मचारी नहीं था, बल्कि कारोबार में डेविड का साझेदार बन चुका था। दोनों ने अपनी दुकान कुछ ही मकान आगे, 117 सैक्रामेंटो स्ट्रीट, में एक बड़े भवन में स्थानांतरित कर दी।

नई दुकान के साथ उन्होंने अपना व्यापार करने का तरीका भी बदल दिया। अब वे केवल सीधे ग्राहकों को ही सामान नहीं बेचते थे, बल्कि दूसरी दुकानों को भी थोक में माल सप्लाई करने लगे। इस तरह वे खुदरा व्यापारी (रिटेलर) होने के साथ-साथ थोक व्यापारी (होलसेलर) भी बन गए।

सोने की खानों के आसपास बसे कस्बों की दुकानों से अधिक ग्राहक बनाने के लिए लेवी एक बार फिर फेरीवाले की तरह यात्रा पर निकल पड़ा।

इस बार उसने पचास डॉलर में एक गाड़ी और पच्चीस डॉलर में एक खच्चर खरीदा। उसने बड़े-बड़े बक्सों में टोपियाँ, कमीज़ें, कैनवास का कपड़ा और दूसरा सामान भरकर गाड़ी पर लाद दिया।

फिर वह अपनी गाड़ी सहित एक साइडव्हील स्टीमर (दोनों किनारों पर बड़े चप्पू वाले भाप के जहाज़) पर चढ़ा और सैक्रामेंटो नदी के रास्ते कैलिफ़ोर्निया की नई और तेजी से बढ़ती राजधानी सैक्रामेंटो पहुँचा।

वहाँ से वह गाड़ी के रास्तों पर चलता हुआ उन छोटे-छोटे कस्बों तक गया, जो सोने की खोज के कारण तेजी से बस गए थे। इनमें एल डोराडो और प्लेसरविल जैसे प्रसिद्ध स्वर्ण-नगर भी शामिल थे।

एक धूप भरे दिन लेवी सैक्रामेंटो नदी के किनारे बैठकर दोपहर का भोजन कर रहा था। तभी एक खनिक वहाँ आया और उसने पूछा, "क्या तुम्हारे पास बेचने के लिए कुछ है?"

लेवी ने अपनी गाड़ी से कैनवास के कपड़े का एक बड़ा थान निकाला और कहा, "अगर चाहो तो खदान में इस्तेमाल करने के लिए एक नया तंबू ले सकते हो।"

खनिक ने सिर हिलाते हुए कहा, "तंबू की मुझे ज़रूरत नहीं है। अगर तुम्हारे पास कोई मज़बूत और टिकाऊ पतलून हो, तो वह मेरे बहुत काम आएगी।"

लेवी कुछ देर सोचता रहा। फिर उसने अपनी जेब से एक डोरी निकाली। उसी डोरी से उसने खनिक की कमर और पैरों का नाप लिया। इसके बाद उसने मुस्कराकर कहा,

"आज शाम तक तुम्हारे लिए एक ऐसी पतलून तैयार हो जाएगी, जो बहुत दिनों तक चलेगी।"

अब मुश्किल यह थी कि पतलून सिलवाने के लिए कोई दर्जी कहाँ मिले।

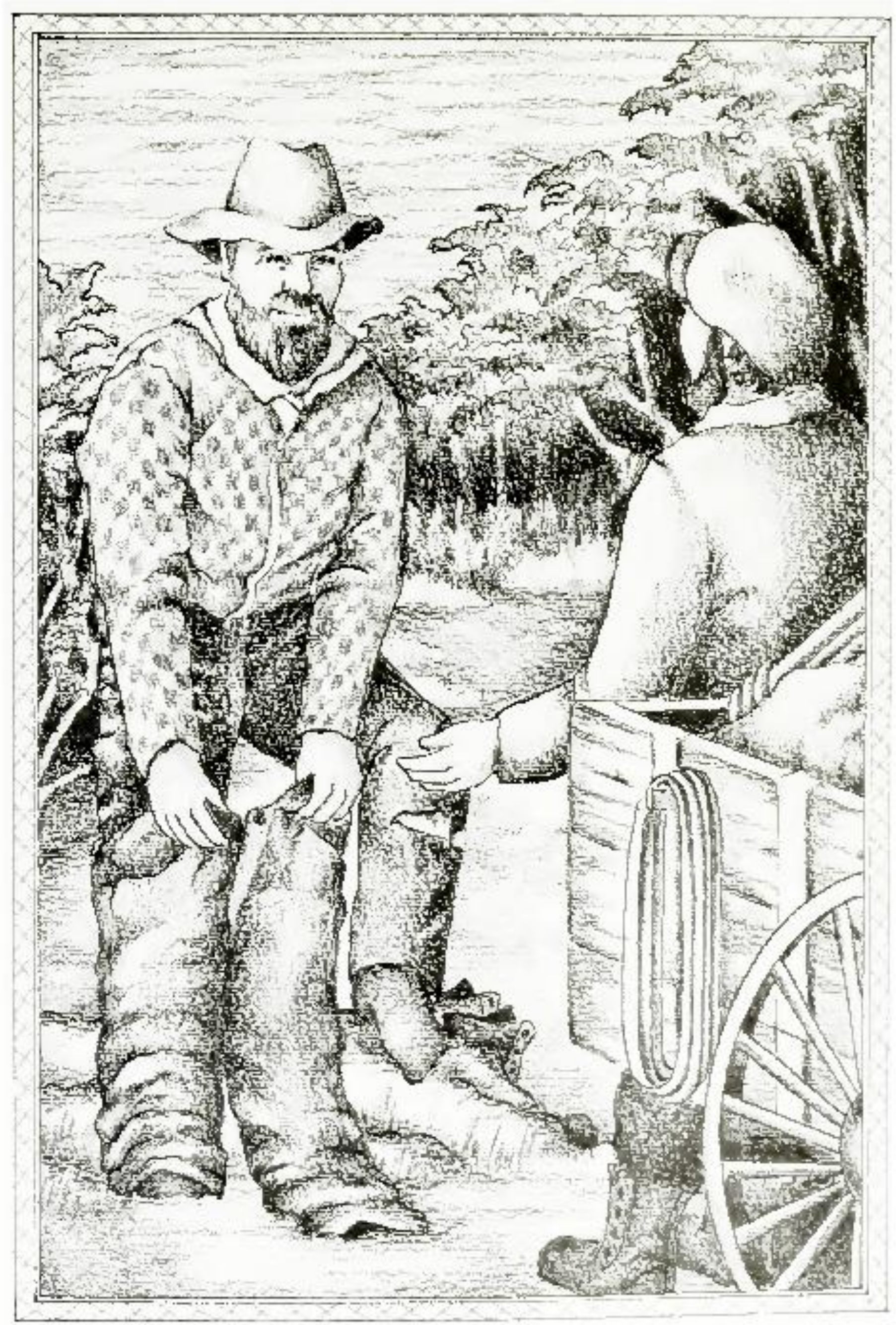
लेवी ने सोचा था कि दर्जी आसानी से मिल जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। ज़्यादातर दर्जी भी सोना खोजने की उम्मीद में खानों की ओर चले गए थे। काफी खोजने के बाद उसे पास के एक कस्बे में एक ऐसा दर्जी मिला, जो सोने के बुखार में बहकर नहीं गया था।

लेवी ने उससे कहा कि वह खनिक के नाप की एक कैनवास की पतलून सिल दे। साथ ही बचे हुए कपड़े से अलग-अलग नाप की और भी कई पतलून तैयार कर दे।

शाम को लेवी फिर उसी जगह पहुँचा, जहाँ उसने उस खनिक को छोड़ा था। उसने मुस्कराकर नई पतलून उसके हाथ में दे दी।

खनिक अपनी किस्मत पर विश्वास ही नहीं कर पा रहा था। उसने तुरंत अपनी फटी-पुरानी पतलून के ऊपर ही नई कैनवास की पतलून पहन ली।

पतलून पहनते ही उसे महसूस हुआ कि यह बहुत मज़बूत है और लंबे समय तक चलेगी। उसने खुशी से कहा कि इसकी जेबें भी इतनी बड़ी हैं कि उनमें सोने के टुकड़े आराम से रखे जा सकते हैं।



खनिक ने खुशी-खुशी लेवी को सोने की धूल के रूप में छह डॉलर का भुगतान किया।

कुछ ही दिनों में उस खनिक ने नदी के किनारे बसे सोने की खानों के शिविरों में हर किसी को "लेवी की पतलून" के बारे में बताना शुरू कर दिया। देखते-ही-देखते लेवी ने दर्जी से सिलवाई हुई सारी पतलून बेच डालीं।

इसके बाद लेवी ने न्यूयॉर्क में अपने भाइयों को पत्र लिखकर और कैनवास का कपड़ा भेजने को कहा, ताकि और पतलून बनाई जा सकें। लेकिन इस बार उनके भाइयों ने कैनवास के बजाय एक मोटा सूती कपड़ा भेजा, जिसे डेनिम कहा जाता था।

यह कपड़ा फ्रांस के नीम (Nîmes) नामक शहर में बनाया जाता था। इसलिए अमेरिका के लोगों ने इसका नाम डेनिम रखा। यह नाम फ्रांसीसी शब्द "दे नीम (de Nîmes)", यानी "नीम शहर का", से बना था।

इस डेनिम से बनी पतलून पहले इटली के जेनोआ शहर के नाविक पहनते थे। इसलिए लोग इन्हें "जीन्स" कहने लगे। यह नाम जेनोआ (Genoa) शहर के नाम से निकला था।

कुछ ही वर्षों में लेवी की पतलून केवल सोना खोजने वाले खनिकों तक सीमित नहीं रहीं। पश्चिम की ओर जाने वाले व्यापारी इनके बारे में दूसरे इलाकों, खासकर टेक्सास, तक खबर ले गए।

काउबॉय इन्हें बहुत पसंद करने लगे, क्योंकि ये दूसरी पतलूनों की तुलना में ज़्यादा टिकाऊ थीं और घोड़े की काठी पर बैठकर काम करते समय पहनने में अधिक आरामदायक भी थीं।

पश्चिम में रेल लाइन बिछाने वाले मज़दूरों ने भी पाया कि लेवी की पतलून दिन-भर की कड़ी मेहनत आसानी से झेल लेती हैं। किसान भी इन्हें पहनने लगे।

लेवी स्वयं इन्हें कमर तक आने वाले ओवरऑल (Waist-High Overalls) कहना पसंद करता था। उसे यही नाम सबसे अच्छा लगता था।

आज कोई भी पूरे विश्वास के साथ यह नहीं कह सकता कि लेवी की पहली पतलून बनने की यह कहानी पूरी तरह सच है या नहीं।

इसका एक बड़ा कारण यह है कि 1906 में सैन फ़्रांसिस्को में आए भीषण भूकंप और उसके बाद लगी आग में लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी के बहुत-से पुराने रिकॉर्ड नष्ट हो गए थे।

लेकिन एक बात बिल्कुल निश्चित है। 1860 के दशक तक अमेरिका के लगभग हर हिस्से में लोग "लेवी की पतलून" पहनने लगे थे। यही पतलून आगे चलकर पूरी दुनिया में जीन्स के नाम से प्रसिद्ध हुई।

5

वे ताँबे की कीलें (रिवेट)

सन् 1866 तक लेवी और डेविड का कारोबार काफी बढ़ चुका था। अब उनकी साझेदारी में लेवी के दोनों भाई, लुई और जोनास, तथा उनके बहनोई विलियम साहलीन भी शामिल हो गए थे।

विलियम ने लेवी की सबसे बड़ी बहन मैरी से विवाह किया था। वे सैन फ्रांसिस्को में लेवी और डेविड के साथ व्यापार संभालते थे, जबकि लुई और जोनास न्यूयॉर्क में सामान बनवाने और दूसरे देशों से माल मँगाने का काम देखते थे।

हालाँकि लेवी सभी साझेदारों में सबसे छोटा था, फिर भी वही पूरे कारोबार का नेतृत्व करता था। उसकी तेज़ समझ, दूरदर्शिता और व्यापारिक बुद्धिमानी के कारण सभी उसका बहुत सम्मान करते थे।

उसी वर्ष सैन फ्रांसिस्को के साझेदारों ने बैटरी स्ट्रीट पर स्थित 14–16 नंबर की एक बड़ी इमारत खरीद ली। यह भवन शहर के उस इलाके में था, जो तेजी से सैन फ्रांसिस्को का प्रमुख व्यापारिक केंद्र बनता जा रहा था।

वे ताँबे की कीलें (रिवेट)

बैटरी स्ट्रीट और क्ले स्ट्रीट के चौराहे पर तीन मंज़िला मर्चेंट्स एक्सचेंज बिल्डिंग थी। लेवी अक्सर वहाँ जाया करता था। वहीं उसे यह जानकारी मिलती थी कि कौन-से जहाज़ बंदरगाह पर आने वाले हैं, उनमें कौन-सा माल है, और दुनिया के दूसरे देशों में क्या हो रहा है। वह विदेशी अख़बार भी पढ़ता था और दूसरे बड़े व्यापारियों से मिलकर कारोबार की बातें करता था।

कुछ ही दूरी पर कियर्नी स्ट्रीट पर कई नई खुदरा दुकानें तेजी से चलने लगी थीं। धीरे-धीरे यह छोटा-सा इलाका घरेलू सामान के व्यापार का सबसे बड़ा केंद्र बनता जा रहा था।

लेवी और उसके साझेदारों ने बैटरी स्ट्रीट वाले गोदाम की मरम्मत करवाई और उसे पहले से कहीं बड़ा और आधुनिक बना दिया। उसमें गैस की रोशनी वाले सुंदर झूमर लगाए गए, सामने का हिस्सा मज़बूत ढलवाँ लोहे (कास्ट आयरन) से बनाया गया और एक नया माल ढोने वाला लिफ्ट भी लगाया गया, जिसके लिए हाल ही में पेटेंट मिला था।

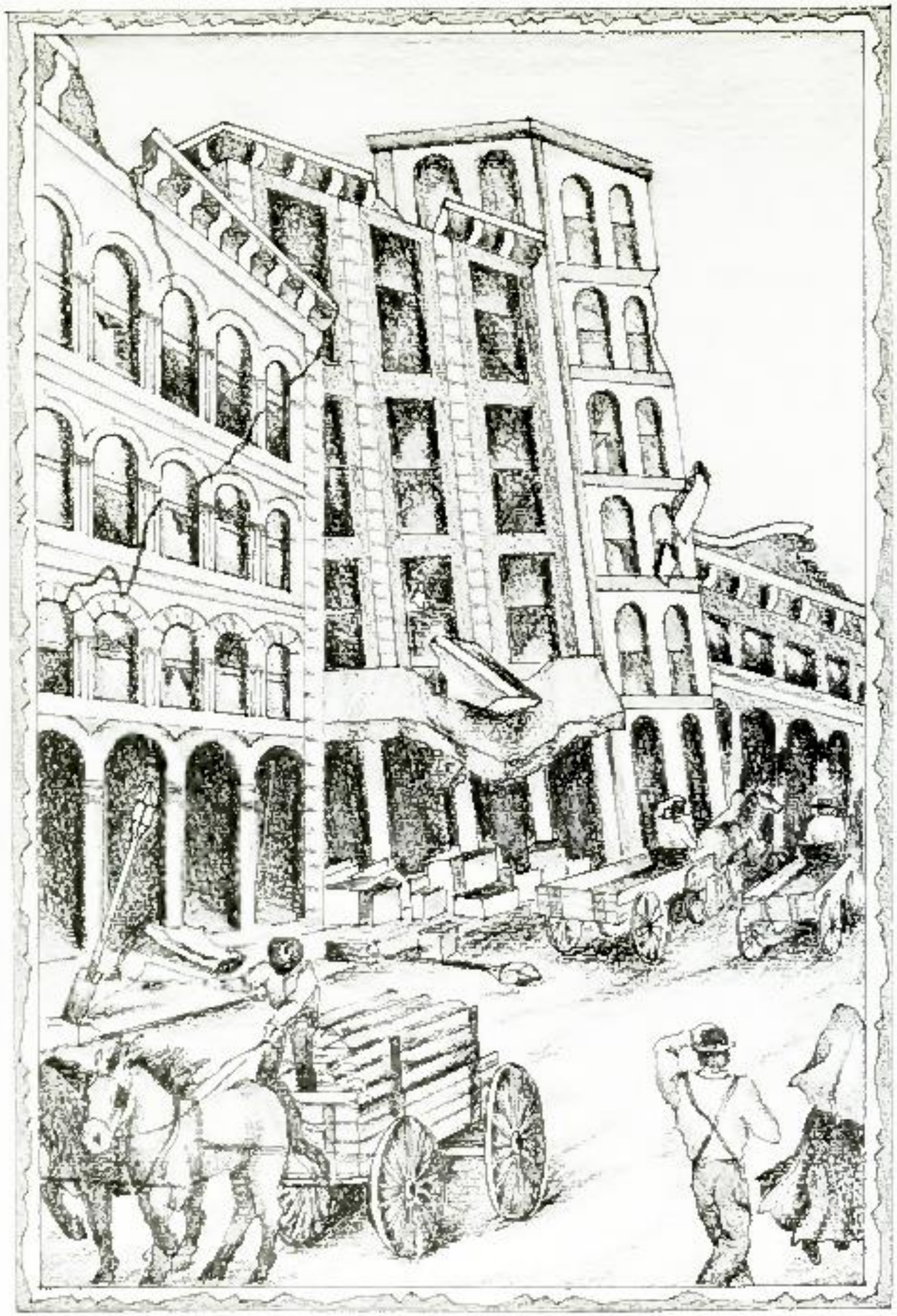
कहा जाता है कि उस समय ऐसा लिफ्ट पूरे सैन फ्रांसिस्को में शायद और कहीं नहीं था। सैन फ्रांसिस्को क्रॉनिकल अख़बार ने कंपनी पर लिखे एक लेख में उसका विशेष उल्लेख किया। उसमें लिखा था कि यह लिफ्ट पानी के दबाव (हाइड्रॉलिक शक्ति) से चलती है और लगभग दो हज़ार पाउंड (करीब 900 किलोग्राम) तक का भार उठा सकती है। लेख में यह भी लिखा था कि यह बहुत सुरक्षित है और इसका पूरा ढाँचा बेहद सुंदर ढंग से सजाया गया है।

यह आधुनिक लिफ्ट इस बात का प्रमाण थी कि लेवी और उसके साझेदार अपने मुख्य कार्यालय को बेहतरीन बनाने में कोई कमी नहीं छोड़ना चाहते थे।

जब नई इमारत पूरी तरह तैयार हो गई, तो लेवी खड़ा होकर देखता रहा। मज़दूरों ने लाल पत्थर के खंभों के ऊपर कंपनी का नया साइनबोर्ड टाँग दिया।

उस पर बड़े अक्षरों में लिखा था—

"Levi Strauss & Co."
"लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी"



साइनबोर्ड बहुत सुंदर लग रहा था।

लेवी और उसके साझेदार चाहते थे कि कंपनी का नाम "स्ट्रॉस ब्रदर्स" रखा जाए, लेकिन यह नाम पहले ही कोई दूसरी कंपनी ले चुकी थी। इसलिए उन्होंने अपनी कंपनी का नाम "लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी" रखा।

पिछले तेरह वर्षों में इस व्यापार ने बहुत तरक्की की थी। सैन फ्रांसिस्को की कई दूसरी घरेलू सामान की दुकानें बंद हो गई थीं और उनके मालिक दिवालिया हो गए थे। लेकिन डेविड स्टर्न और लेवी स्ट्रॉस की कंपनी न केवल कठिन समय में टिकी रही, बल्कि लगातार आगे बढ़ती गई।

हालाँकि अगले दो वर्ष उनके लिए आसान नहीं रहे।

सन् 1867 में लेवी की सबसे बड़ी बहन मैरी का निधन हो गया। उनके पीछे उनके पति विलियम, एक बेटी और दो बेटे रह गए।

अगले ही वर्ष, 1868 में, सैन फ्रांसिस्को में एक शक्तिशाली भूकंप आया। उस समय तक यह उस युवा शहर का सबसे भीषण भूकंप था। तीन वर्ष पहले भी एक छोटा भूकंप आया था, जिसने कुछ इमारतों को उनकी नींव से हिला दिया था। लेकिन 1868 का भूकंप पहला ऐसा भूकंप था, जिसमें लोगों की जान गई।

इस भयानक आपदा में बारह लोगों की मृत्यु हो गई। शहर की इमारतों और दूसरी संपत्ति को चार लाख डॉलर से भी अधिक का नुकसान पहुँचा।

भूकंप के झटके इतने ज़ोरदार थे कि नई बनी लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी की इमारत ऊपर से नीचे तक कई जगहों से दरक गई।

जैसे ही धरती का काँपना रुका, लेवी सबसे पहले अपने कर्मचारियों का हाल जानने दौड़ा। वे सभी डर के मारे काँप रहे थे, लेकिन सौभाग्य से कोई भी घायल नहीं हुआ था।

इमारत में आई दरारों की जल्द ही मरम्मत कर दी गई। कुछ ही समय बाद कंपनी का काम पहले की तरह फिर से सुचारु रूप से चलने लगा।

फ़रवरी 1872 में सैन फ्रांसिस्को क्रॉनिकल ने कंपनी की तेज़ डिलीवरी सेवा की खुलकर प्रशंसा की। अख़बार ने लिखा:

"जैसे ही किसी ग्राहक का ऑर्डर मिलता है, कर्मचारियों की एक बड़ी टीम तुरंत सामान तैयार करने में लग जाती है। चाहे माल शहर के भीतर पहुँचाना हो या कहीं बाहर भेजना हो, कंपनी के पास अपनी गाड़ियाँ और अपने कर्मचारी हैं। इसलिए सामान बिना समय गँवाए ग्राहक तक पहुँचा दिया जाता है।"

अब लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी केवल कैलिफ़ोर्निया तक ही सीमित नहीं रही थी। वह घरेलू सामान और कमर तक आने वाले मज़बूत ओवरऑल (पतलून) कैलिफ़ोर्निया से बहुत दूर-दूर तक बेच रही थी। उसके ग्राहक ओरेगन, वॉशिंगटन टेरिटरी, वैंकूवर द्वीप, ब्रिटिश कोलंबिया, अलास्का, एरिज़ोना, नेवाडा, यूटा, आइडाहो और हवाई द्वीपों तक फैल चुके थे।

अब लेवी स्वयं फेरी लगाकर सामान बेचने नहीं जाता था। उसने अपनी जगह दस सेल्समैन नियुक्त कर दिए थे।

इन युवाओं को, लेवी की तरह, गाँव-गाँव और कस्बे-कस्बे पैदल नहीं घूमना पड़ता था। वे कंपनी के खर्चे पर रेलगाड़ी या जहाज़ से यात्रा करते थे और कभी-कभी ज़रूरत पड़ने पर घोड़ागाड़ी (वैगन) से भी जाते थे।

वे अपनी पीठ पर भारी-भरकम सामान नहीं ढोते थे। उसके बजाय वे अपने साथ कैटलॉग और सामान के नमूने वाले बक्से लेकर चलते थे। जहाँ भी पहुँचते, वहाँ उन्हें सड़क किनारे या किसी किसान के खलिहान में रात बिताने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। वे आराम से होटलों में ठहरते थे।

फिर भी वे अपना काम पूरी मेहनत और ईमानदारी से करते थे।

हर साल कंपनी की बिक्री लगातार बढ़ती जा रही थी। पूरे पश्चिमी अमेरिका में लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी अपनी तरह की ऐसी अकेली थोक व्यापारिक कंपनी मानी जाती थी, जो एक ही जगह से कपड़े और घरेलू सामान, दोनों बड़ी मात्रा में बेचती थी।

दुकानदारों के लिए यह बहुत सुविधाजनक था। उन्हें अपनी दुकान का लगभग सारा सामान एक ही जगह से और एक ही ऑर्डर में मिल जाता था।

यहाँ तक कि सैन फ्रांसिस्को के कई दुकानदार भी लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी से ही माल खरीदते थे, क्योंकि यहाँ की कीमतें न्यूयॉर्क की कंपनियों से कम थीं। इसके अलावा, स्थानीय व्यापारियों को दूर-दराज़ से सामान मँगवाने में होने वाली देरी या रास्ते के जोखिमों की भी चिंता नहीं करनी पड़ती थी।

धीरे-धीरे पूरे अमेरिका में लेवी स्ट्रॉस का नाम सम्मान के साथ लिया जाने लगा।

बैटरी स्ट्रीट पर स्थित चार मंज़िला इमारत अमेरिका और दूसरे देशों से आए तरह-तरह के कपड़ों, लिनेन और घर में काम आने वाली अनेक वस्तुओं का एक शानदार प्रदर्शन-स्थल बन गई थी।

कपड़ों वाले विभाग में मुख्य रूप से पुरुषों और लड़कों के लिए डेनिम की पतलून, कमीज़ें और जैकेट रखे जाते थे।

सैन फ्रांसिस्को क्रॉनिकल के अनुसार, ये कपड़े न्यूयॉर्क की प्रसिद्ध कंपनी जे. स्ट्रॉस ब्रदर्स एंड कंपनी के विशेष ऑर्डर पर तैयार किए जाते थे।

विदेशी सामान वाले विभाग में इंग्लैंड, जर्मनी और फ्रांस से मँगाए गए अनेक प्रकार के मोज़े, महिलाओं और बच्चों के लिए हर तरह के कपड़े, सफ़ेद सूती कपड़ों की पूरी श्रृंखला, रज़ाइयाँ, आयरलैंड का बढ़िया लिनेन, मेज़पोश, तौलिये और घर में काम आने वाली कई दूसरी वस्तुएँ उपलब्ध थीं।

लेवी के साथ काम करने वाले सभी लोग अच्छी तरह जानते थे कि उनसे वही उम्मीद की जाती है, जो लेवी स्वयं अपने काम से रखता था। उन्हें पूरी मेहनत और ईमानदारी से काम करना था तथा हर ग्राहक को सबसे अच्छी और सबसे तेज़ सेवा देनी थी।

सैन फ्रांसिस्को क्रॉनिकल अख़बार लेवी के अनुशासन और कामकाज के तरीके से बहुत प्रभावित था। उसने लिखा:

"यहाँ काम करने वाले इतने सारे लोग—सेल्समैन, मुनीम, क्लर्क, सहायक, सामान ढोने वाले कर्मचारी और गाड़ीवान—हर समय मधुमक्खियों की तरह व्यस्त दिखाई देते हैं।"

दुकान सप्ताह में छह दिन खुलती थी। सुबह ठीक छह बजे से लेकर शाम छह बजे तक लगातार काम चलता था। कई वर्षों तक लेवी अपना अधिकांश समय इसी दुकान में बिताता रहा।

हर सुबह ठीक नौ बजे लेवी 317 पावेल स्ट्रीट स्थित स्टर्न परिवार के घर से निकलता और पैदल आठ ब्लॉक चलकर बैटरी स्ट्रीट पर अपनी दुकान पहुँचता।

वह अपनी चमकदार रेशमी ऊँची टोपी, जिसे *स्टोवपाइप हैट* कहा जाता था, और लंबे काले कोट में बहुत आकर्षक दिखाई देता था।

दुकान जाते समय वह रास्ते में कई दुकानदारों से रुककर बातें करता। उनमें से कुछ उसके प्रतिद्वंद्वी थे, लेकिन साथ ही उसके अच्छे मित्र भी थे।

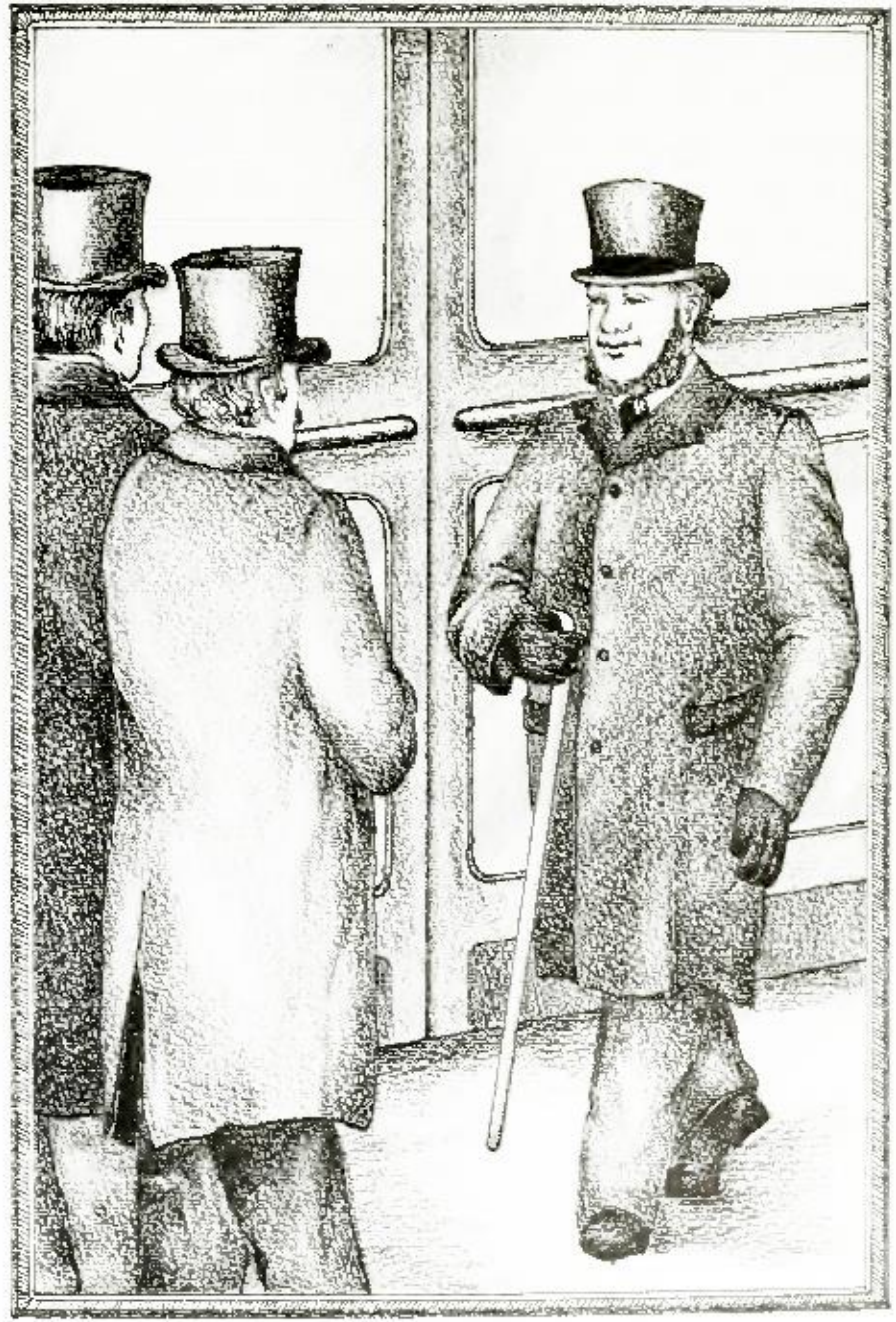
दुकान में प्रवेश करते ही लेवी हर कर्मचारी का नाम लेकर उसका अभिवादन करता। कर्मचारी भी उसे उसके पहले नाम "लेवी" से ही पुकारते थे।

लेवी को "मिस्टर स्ट्रॉस" कहलाना बहुत औपचारिक लगता था। वह चाहता था कि उसके सभी कर्मचारी अपने आपको इस पारिवारिक व्यापार का एक सदस्य समझें।

वह नए से नए कर्मचारी से भी समय निकालकर मिलता, उसकी बातें सुनता और उसे अच्छी तरह जानने की कोशिश करता। जो कर्मचारी मेहनत और ईमानदारी से काम करते थे, उन्हें आगे बढ़ने और पदोन्नति मिलने का पूरा अवसर मिलता था।

दुकान के पीछे बने अपने निजी कार्यालय में पहुँचकर लेवी दिनभर के व्यापारिक लेन-देन, नए प्रस्तावों और अन्य ज़रूरी कागज़ों की जाँच-पड़ताल में लग जाता।

उसके कार्यालय से पूरी थोक कपड़ा बिक्री शाखा साफ़ दिखाई देती थी, इसलिए वह अपने कर्मचारियों के काम पर भी आसानी से नज़र रख सकता था।



अगर लेवी की नज़र किसी पुराने ग्राहक पर पड़ती, तो वह तुरंत अपने कार्यालय से बाहर आकर उससे मिलने लगता। फेरीवाले के दिनों से ही उसने एक बात अच्छी तरह सीख ली थी—दोस्त के साथ व्यापार करना किसी अनजान व्यक्ति के साथ व्यापार करने से कहीं आसान होता है।

लेवी का हर दिन व्यापार से जुड़े फैसले लेने, ग्राहकों से मिलने और बैठकों में भाग लेने में बीतता था।

दिन के अंत में वह अपने भरोसेमंद मुनीम फ़िलिप फ़िशर के साथ बैठकर उस दिन की बिक्री का पूरा हिसाब देखता। उसके बाद वह पावेल स्ट्रीट स्थित अपने घर लौट जाता।

शाम को, जब सूरज ढलने लगता, तो लेवी फिर से अपनी ऊँची रेशमी टोपी पहनता और तेज़ कदमों से पैदल सेंट फ्रांसिस होटल की ओर निकल पड़ता। वहाँ उसके लिए एक सुंदर मेज़, कुछ घनिष्ठ मित्र और स्वादिष्ट भोजन उसका इंतज़ार कर रहे होते थे।

लेवी अपने नियमित जीवन और सफल व्यापार से पूरी तरह संतुष्ट था। सब कुछ सुचारु रूप से चल रहा था।

लेकिन जुलाई 1872 की एक सुबह उसे एक ऐसा पत्र मिला, जिसने उसकी कंपनी का भविष्य हमेशा के लिए बदल दिया।

यह पत्र जैकब डेविस नाम के एक ग्राहक ने भेजा था। उसने पत्र की शुरुआत "लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी के सज्जनों के नाम" लिखकर की थी।

जैकब डेविस रेनो, नेवाडा में एक दर्जी था। वह अपने तंबू, घोड़ों के कंबल और बैलगाड़ियों के लिए कपड़े के कवर बनाने के लिए लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी से हल्के रंग का मजबूत डक क्लॉथ खरीदा करता था।

लेकिन इस बार उसने नौ औंस वजन वाला नीला डेनिम कपड़ा मँगवाया था।

उसने यह पत्र कपड़े की शिकायत करने के लिए नहीं लिखा था।

वह लेवी को अपनी एक नई और महत्वपूर्ण खोज के बारे में बताना चाहता था।

दिसंबर 1870 में एक महिला जैकब डेविस की दुकान पर आई। उसने उनसे अपने पति के लिए एक ऐसी पतलून सिलने को कहा, जो बहुत मज़बूत हो।

उस महिला का पति काफ़ी हट्टा-कट्टा था। काम करते समय उसकी पतलून की जेबों की सिलाई बार-बार फट जाती थी। इसलिए डेविस ने उसके लिए एक नई पतलून तैयार की।

जब वह पतलून सिलकर लगभग तैयार हो गई, तभी डेविस की नज़र मेज़ पर पड़े कुछ ताँबे के रिवेट (धातु की मज़बूत कीलें) पर पड़ी। उसके मन में एक नया विचार आया। उसने सोचा कि क्यों न जेबों के कोनों पर ये रिवेट लगा दिए जाएँ, ताकि सिलाई और भी मज़बूत हो जाए।

उसका यह प्रयोग पूरी तरह सफल रहा।

अब चाहे पतलून कितनी भी कठिन मेहनत में पहनी जाए, जेबों की सिलाई नहीं फटती थी। डेविस ने अपने पत्र में लिखा कि उस दिन के बाद से लोग लगातार ऐसी रिवेट लगी पतलून की माँग करने लगे।

अपने पत्र में उसने लिखा:

"इन पतलूनों का असली राज़ उन रिवेटों में है, जिन्हें मैं जेबों पर लगाता हूँ। इनकी माँग इतनी बढ़ गई है कि मैं उतनी तेज़ी से इन्हें बनाकर दे ही नहीं पा रहा हूँ।"

उस समय तक डेविस लगभग दो सौ जोड़ी ऐसी पतलून बना और बेच चुका था।

अपने दावे को साबित करने के लिए उसने रिवेट लगी दो पतलून भी पत्र के साथ भेजीं, ताकि लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी के साझेदार उन्हें स्वयं देखकर उनकी मज़बूती परख सकें।

डेविस का यह नया विचार लेवी और उसके साझेदारों को बहुत पसंद आया।

उन्होंने तुरंत डेविस के साथ समझौता कर लिया। फिर सभी ने मिलकर ऐसी पतलून के लिए पेटेंट (आविष्कार का कानूनी अधिकार) लेने का आवेदन किया, जिसकी जेबों और ज़्यादा दबाव पड़ने वाली जगहों को ताँबे के रिवेटों से अतिरिक्त मज़बूती दी गई थी।

पेटेंट मिलने का अर्थ था कि यह नया विचार कानूनी रूप से उनका अपना आविष्कार माना जाएगा। इसके बाद अमेरिका में कोई दूसरी कंपनी इसी तरह की पतलून बनाकर नहीं बेच सकेगी।

लेकिन शुरुआत में उनका पेटेंट आवेदन स्वीकार नहीं हुआ।

संयुक्त राज्य अमेरिका के पेटेंट कार्यालय ने कहा कि अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान उत्तरी सेना के सैनिकों के लिए बनाए गए कुछ जूतों में पहले भी ऐसे ताँबे के रिवेट लगाए जा चुके थे। इसलिए यह विचार पूरी तरह नया नहीं माना जा सकता।

लेवी और जैकब डेविस ने हार नहीं मानी। उन्होंने अपने आवेदन में कुछ बदलाव किए और फिर से आवेदन किया।

लेकिन फिर भी सफलता नहीं मिली।

उन्होंने एक बार फिर कोशिश की।

और फिर एक बार और।

आख़िरकार, लगातार दस महीने तक प्रयास करने के बाद 20 मई 1873 को जैकब डेविस और लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी को ताँबे के रिवेटों से मज़बूत बनाई गई पतलून का पेटेंट मिल गया।

हालाँकि पेटेंट मिलने से पहले ही जैकब डेविस ने रेनो में अपनी दुकान बंद कर दी थी। वह अपनी पत्नी एनी और अपने छह बच्चों के साथ सैन फ़्रांसिस्को आकर बस गया।

वहाँ वह लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी का पहला उत्पादन प्रबंधक (प्रोडक्शन फ़ोरमैन) बना। उसका काम रिवेट लगी पतलूनों के निर्माण की पूरी व्यवस्था देखना था।

वह ध्यान रखता था कि कपड़ा ठीक प्रकार से काटा जाए, उसके बंडल बनाए जाएँ और हर सुबह उन्हें सैन फ़्रांसिस्को में रहने वाली दर्जिनों (महिला सिलाईकर्मियों) के घर पहुँचा दिया जाए।

शाम को वह हर दर्जिन के घर जाकर तैयार की गई पतलूनें इकट्ठी करता। कई बार एक ही महिला दिन भर में पाँच जोड़ी पतलून सिल देती थी।

ये पतलून सफ़ेद या भूरे रंग के मज़बूत कैनवास अथवा नीले डेनिम कपड़े से बनाई जाती थीं।

डेविस हर एक पतलून को बहुत ध्यान से जाँचता, ताकि उसकी सिलाई और रिवेट सही तरह से लगे हों।

रिवेट लगी ये नई पतलूनें देखते ही देखते लोगों की पहली पसंद बन गईं।

ताँबे के रिवेटों की वजह से लेवी की कामकाजी पतलून पहले से भी कहीं अधिक मज़बूत और लंबे समय तक चलने वाली हो गई थीं।

कुछ ही हफ्तों में लेवी की नई पतलूनों की माँग इतनी बढ़ गई कि कंपनी के साझेदारों ने सैन फ़्रांसिस्को में अपना कपड़े बनाने का कारखाना खोलने का निर्णय लिया।



कंपनी के लिए यह एक बिल्कुल नया कदम था। रिवेट लगी पतलून बनने से पहले लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी के सभी कपड़े—यहाँ तक कि लेवी की प्रसिद्ध पतलून भी—न्यूयॉर्क में जे. स्ट्रॉस ब्रदर्स एंड कंपनी द्वारा तैयार किए जाते थे।

जब कंपनी ने जैकब डेविस से इस पतलून के पेटेंट में उसका आधा हिस्सा खरीद लिया, तब उसने फ़्रेमोंट स्ट्रीट पर स्थित डोनाह्यू बिल्डिंग भी खरीद ली।

इस नए कारखाने में साठ महिलाओं को काम पर रखा गया। हर महिला रोज़ पाँच या छह कपड़े तैयार करती थी। इस काम के बदले उन्हें तीन डॉलर मिलते थे। जो महिला जितने अधिक कपड़े सिलती, उसकी कमाई भी उतनी ही बढ़ जाती।

इन महिलाओं को अपने काम पर गर्व था। वे रोज़ शाम घर लौटते समय अपनी जेब में उतने ही पैसे लेकर जाती थीं, जितने उस समय कठिन शारीरिक मेहनत करने वाले पुरुष कमाते थे।

कुछ महिलाएँ कंबल की गर्म अस्तर वाली पतलून और शिकार के लिए जैकेट सिलती थीं। दूसरी महिलाएँ ताँबे के रिवेट लगी मशहूर पतलून तैयार करती थीं।

यही रिवेट लगी डेनिम की पतलून आगे चलकर दुनिया की पहली 501 जीन्स के नाम से प्रसिद्ध हुई।

501 वास्तव में कपड़े के उस बैच (लॉट) का नंबर था, जिससे ये पतलून बनाई जाती थीं।

शुरुआत में ये जीन्स नौ औंस वज़न वाले डेनिम से बनती थीं। बाद में इसे बढ़ाकर दस औंस कर दिया गया, जिससे कपड़ा और भी मज़बूत हो गया।

इनके पायँचें नीचे की ओर थोड़े सँकरे रखे जाते थे, ताकि उन्हें आसानी से जूतों या लंबे बूटों के अंदर डाला जा सके।

हर जीन्स थोड़ी बड़ी सिलकर बनाई जाती थी। ऐसा इसलिए किया जाता था कि पहली धुलाई के बाद कपड़ा थोड़ा सिकुड़ जाए और जीन्स पहनने वाले के शरीर पर बिल्कुल ठीक तरह से फिट हो जाए।

सन् 1873 में, जिस वर्ष इस पतलून का पेटेंट मंज़ूर हुआ, उसी वर्ष लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी ने अपनी जीन्स के लिए एक विशेष ट्रेडमार्क (पहचान-चिह्न) भी बनाया।

यह ट्रेडमार्क जीन्स की पिछली दोनों जेबों पर नारंगी रंग के धागे से बनाई गई दो मुड़ी हुई सलाइयों का डिज़ाइन था। इसे देखने पर ऐसा लगता था, जैसे उड़ते हुए समुद्री पक्षी (सीगल) के दोनों पंख फैले हों।

जैकब डेविस ने जान-बूझकर नारंगी धागा चुना था, ताकि उसका रंग ताँबे के रिवेटों से मेल खाए।

कुछ वर्षों बाद, 1886 में कंपनी ने एक और नया ट्रेडमार्क अपनाया।

अब हर जीन्स की कमर पर एक चमड़े का पैच (लेबल) भी लगाया जाने लगा। उस पैच पर दो घोड़ों की तस्वीर बनी होती थी। दोनों घोड़े पूरी ताकत से एक ही जीन्स को विपरीत दिशाओं में खींच रहे होते थे, लेकिन फिर भी वह फटती नहीं थी।

यह चित्र इस बात की गारंटी था कि लेवी की कमर तक आने वाली ओवरऑल (जीन्स) सबसे कठिन मेहनत और सबसे ज़्यादा घिसाई भी आसानी से सह सकती हैं।

और हाँ, यह चमड़े का पैच भी उसी नारंगी धागे से सिला जाता था।

लेवी अपने जीवनकाल में इसे नहीं देख पाया, लेकिन 1936 में उसकी जीन्स पर एक और नया पहचान-चिह्न जोड़ा गया।

यह था छोटा-सा लाल और सफ़ेद रंग का टैब, जिस पर "Levi's" लिखा होता था। इसे जीन्स की दाहिनी पिछली जेब की सिलाई में लगाया जाता था।

आज भी ये तीनों पहचान-चिह्न—पिछली जेबों की दो मुड़ी हुई नारंगी सिलाइयाँ, दो घोड़ों वाला चमड़े का पैच, और लाल-सफ़ेद "Levi's" टैब—लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी की जीन्स की पहचान बने हुए हैं।

6

उदार हृदय

सन् 1874 का वर्ष लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी के लिए खुशियाँ भी लेकर आया और दुख भी।

खुशी की बात यह थी कि उस वर्ष कंपनी ने रिवेट लगी पतलून, बनियान, कोट और कमीज़ों की 5,875 दर्जन (लगभग 70,500 वस्तुएँ) बेचकर 1,48,471 डॉलर की बिक्री की।

लेकिन इसी वर्ष कंपनी को एक बड़ा झटका भी लगा।

लेवी के पहले साझेदार और उसकी बहन फैनी के पति डेविड स्टर्न का इक्यावन वर्ष की आयु में निधन हो गया।

डेविड के सबसे बड़े बेटे जैकब स्टर्न, जो शांत और गंभीर स्वभाव के युवक थे, ने अपने पिता की जगह कंपनी में काम संभाल लिया।

उस समय लेवी की उम्र पैंतालीस वर्ष थी। उसने कभी विवाह नहीं किया था।

फैनी चाहती थी कि उसका भाई हमेशा परिवार के साथ ही रहे। इसलिए उसने लेवी से आग्रह किया कि वह उसी के घर में उसके और उसके सात बच्चों के साथ रहता रहे।

कुछ समय बाद फैनी ने अपने विधुर देवर विलियम साहलीन से विवाह कर लिया।

इसके बाद दोनों परिवार एक नए घर में रहने लगे और लेवी भी उनके साथ वहाँ चला गया।

पोस्ट स्ट्रीट और लेवेनवर्थ स्ट्रीट के कोने पर बना वह नया घर इतना बड़ा था कि दोनों परिवारों के तेरह सदस्य आराम से उसमें रह सकते थे।

कई बार न्यूयॉर्क से लेवी के भाई जोनास स्ट्रॉस का बेटा नाथन भी मिलने आता था। तब कुछ समय के लिए वही घर उसका भी ठिकाना बन जाता था।

लेवी अपने सभी भतीजों को व्यापार चलाने की बारीकियाँ सिखाता था।

वह उन्हें समझाता था कि ग्राहकों और व्यापारिक साथियों के साथ मज़बूत और भरोसेमंद संबंध कैसे बनाए जाते हैं। साथ ही यह भी सिखाता था कि जब कोई अच्छा अवसर मिले, तो उसे पहचानकर तुरंत उसका लाभ कैसे उठाया जाए।

सन् 1875 में लेवी के सामने ऐसा ही एक अवसर आया।

मिशन एंड पैसिफ़िक वूलन मिल्स, जो कई वर्षों से लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी को ऊनी कंबल और कपड़ा उपलब्ध करा रही थी, बिक्री के लिए रखी गई।

लेवी ने तुरंत समझ लिया कि यदि यह मिल खरीद ली जाए, तो भविष्य में कंपनी को बहुत लाभ होगा। इसलिए उसने बिना अधिक देर किए लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी की ओर से उस मिल को खरीद लिया।

अगले ही वर्ष, 1876 में, लेवी ने एक और साहसी निर्णय लिया।

उस समय तक कंपनी की सालाना बिक्री लगभग दो लाख डॉलर तक पहुँच चुकी थी। बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए उसने जैकब डेविस को न्यूयॉर्क भेजा, ताकि वहाँ रिवेट लगी डेनिम की पतलून बनाने का एक नया कारखाना शुरू किया जा सके।

लेकिन लेवी ने एक बात का विशेष ध्यान रखा। उसने तय किया कि कंपनी का मुख्य कार्यालय (हेड ऑफिस) वहीं रहेगा, जहाँ से यह व्यापार शुरू हुआ था—सैन फ़्रांसिस्को।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में लेवी ने कई बड़ी निजी संपत्तियाँ भी खरीदीं।

धीरे-धीरे सैन फ़्रांसिस्को में उसकी पहचान केवल एक सफल व्यापारी की ही नहीं, बल्कि एक सम्मानित और प्रभावशाली नागरिक की भी बन गई।

इसी कारण सैन फ़्रांसिस्को गैस कंपनी सहित कई प्रतिष्ठित संस्थाओं ने उसे अपने निदेशक मंडल (बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स) का सदस्य बनने का निमंत्रण दिया।

सैन फ्रांसिस्को बोर्ड ऑफ ट्रेड के संस्थापक सदस्यों में से एक और उसके कोषाध्यक्ष के रूप में भी लेवी बहुत सक्रिय था।

वह लगातार अमेरिका की कांग्रेस से आग्रह करता था कि मध्य अमेरिका में एक नहर बनाई जाए। उसे अपनी वह लंबी और कठिन समुद्री यात्रा अच्छी तरह याद थी, जब उसे केप हॉर्न का चक्कर लगाकर सैन फ्रांसिस्को पहुँचना पड़ा था।

लेवी समझता था कि यदि मध्य अमेरिका में एक नहर बन जाए, तो न्यूयॉर्क और सैन फ्रांसिस्को के बीच जहाज़ों का सफ़र बहुत छोटा हो जाएगा और व्यापार पहले से कहीं अधिक तेज़ी से बढ़ सकेगा।

इतना व्यस्त रहने के बावजूद लेवी समाज-सेवा के लिए हमेशा समय निकालता था। वह ज़रूरतमंद लोगों और सामाजिक संस्थाओं की खुलकर आर्थिक सहायता करता था। कई बार वह दान इस तरह देता था कि किसी को यह भी पता नहीं चलता था कि मदद किसने की है।

लेवी को विशेष रूप से बच्चों और युवाओं की सहायता करना बहुत पसंद था। शायद इसका एक कारण यह भी था कि उसकी अपनी कोई संतान नहीं थी।

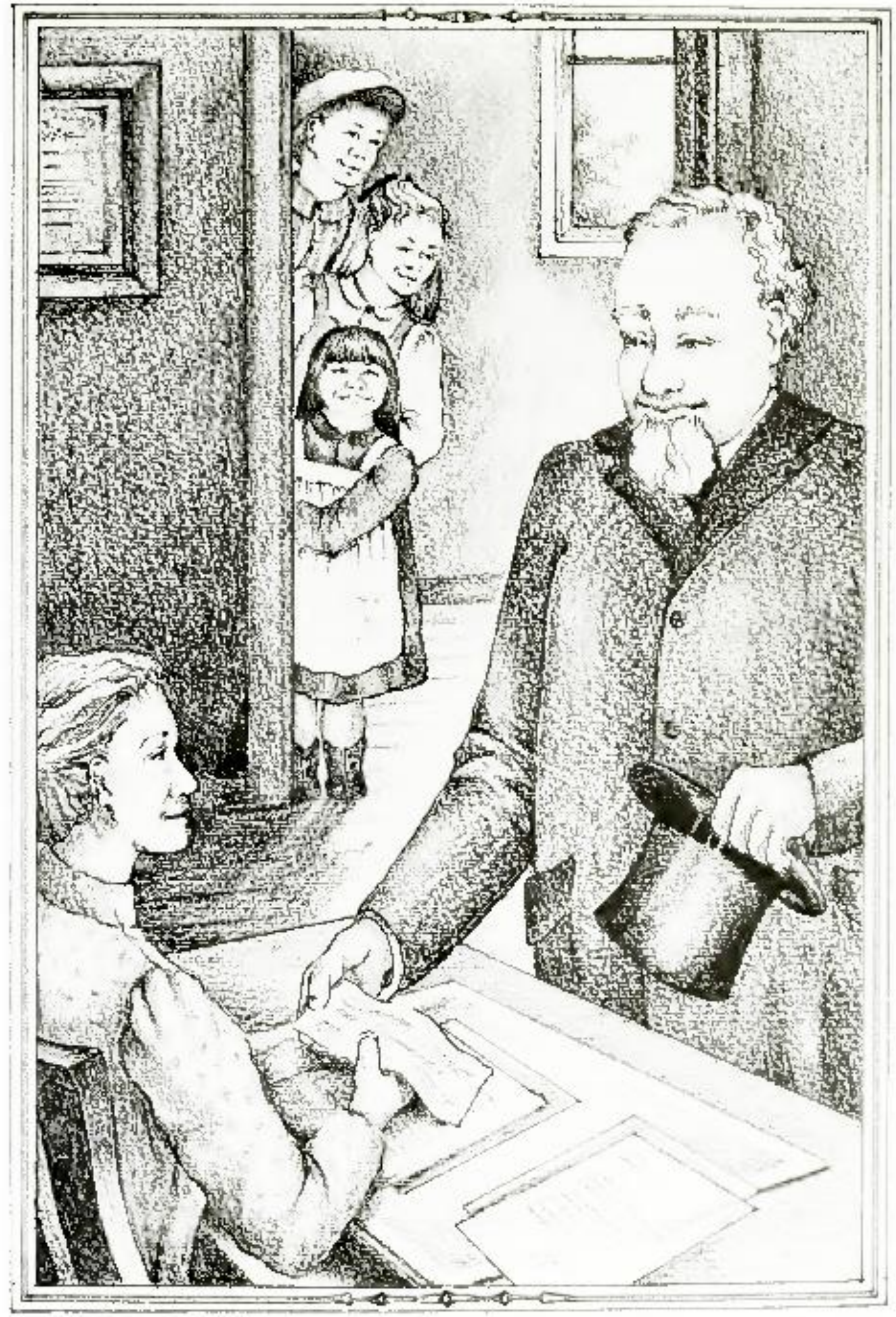
उसके यहूदी धर्म ने उसे सिखाया था कि हर गरीब और ज़रूरतमंद की सहायता करनी चाहिए—चाहे वह यहूदी हो या किसी दूसरे धर्म का। उसे यह भी सिखाया गया था कि विधवाओं और अनाथ बच्चों की विशेष रूप से मदद करनी चाहिए।

इसी सोच के कारण लेवी ने यहूदी, कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट—तीनों समुदायों के अनाथालयों को उदारतापूर्वक दान दिया।

लेवी स्वयं अधिक औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाया था। इसलिए वह चाहता था कि मेहनती और योग्य विद्यार्थियों की पढ़ाई केवल पैसों की कमी के कारण कभी न रुके।

उसने यहूदी विद्यार्थियों के लिए हिब्रू विद्यालयों में पढ़ने हेतु छात्रवृत्तियाँ शुरू कीं। इसके अलावा उसने कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय में कुल अट्ठाईस छात्रवृत्तियाँ स्थापित कीं। उस समय कांग्रेस के सात निर्वाचन क्षेत्रों में से प्रत्येक के लिए चार-चार छात्रवृत्तियाँ निर्धारित की गईं।

इतना ही नहीं, लेवी कैलिफ़ोर्निया स्कूल फ़ॉर द डेफ़ (श्रवण-बाधित बच्चों के विद्यालय) के निदेशक मंडल का सदस्य भी था और उसके विकास में सक्रिय योगदान देता था।



समय के साथ लेवी को इस विद्यालय और वहाँ पढ़ने वाले बच्चों से विशेष लगाव हो गया।

वह केवल धन ही नहीं देता था, बल्कि अपना समय भी विद्यालय के विकास में लगाता था। उसने विद्यालय को एक अनोखा उपहार भी दिया—काँसे की बनी एक बड़ी घंटी, जिसे विद्यालय के घड़ी वाले टावर में लगाया गया।

1880 से 1890 के बीच लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी लगातार आगे बढ़ती रही।

इस दौरान लेवी के कपड़े बनाने वाले कर्मचारियों की संख्या 250 से बढ़कर 450 हो गई।

हो सकता है कि लेवी सभी कर्मचारियों के नाम न जानता हो, लेकिन सभी कर्मचारी उसे अच्छी तरह जानते थे। अब तो पूरे देश में लोग लेवी स्ट्रॉस का नाम पहचानने लगे थे।

1890 में, जब लेवी इकसठ वर्ष का था, उसने अपनी बहन फैनी के चार बेटों—जैकब, सिगमंड, लुई और अब्राहम—को कंपनी का साझेदार बना लिया।

हालाँकि अब लेवी अपना बहुत-सा समय विभिन्न संस्थाओं की बैठकों और समाज-सेवा से जुड़ी समितियों में बिताता था, फिर भी कंपनी का सबसे बड़ा जिम्मेदार वही था।

लेवी ने कभी सचमुच अपने काम से संन्यास नहीं लिया।

उसका व्यापार ही उसका जीवन बन चुका था।

जब वह छियासठ वर्ष का था, तब उसने सैन फ़्रांसिस्को बुलेटिन के एक पत्रकार से कहा—

"मैं पिछले तैंतालीस वर्षों से लगातार काम कर रहा हूँ। अपनी रोज़ की जिम्मेदारियों के बिना मैं रह ही नहीं सकता। मैंने विवाह नहीं किया है, इसलिए शायद मुझे और भी अधिक काम करने की ज़रूरत महसूस होती है। मेरा पूरा जीवन मेरे व्यापार में ही बसता है। मेरा मानना है कि जो व्यक्ति हमेशा व्यस्त रहने की आदत डाल लेता है, वह कभी पूरी तरह काम छोड़कर संतुष्ट नहीं रह सकता।"

हालाँकि लेवी करोड़ों डॉलर का मालिक बन चुका था, फिर भी उसका मानना था कि पैसा ही खुशी की कुंजी नहीं है।

उसने सैन फ़्रांसिस्को बुलेटिन के एक पत्रकार से कहा—

"मुझे नहीं लगता कि बहुत अधिक धन किसी व्यक्ति को सचमुच खुश कर सकता है। अक्सर होता यह है कि जिसके पास बहुत धन होता है, वही अपने धन का गुलाम बन जाता है। उसे अपना पूरा जीवन अपनी संपत्ति की देखभाल में लगा देना पड़ता है। मुझे यह भी नहीं लगता कि पैसा किसी के लिए सच्चे मित्र ला सकता है। बल्कि कई बार इसका बिल्कुल उलटा होता है।"

26 सितंबर 1902 को, तिहत्तर वर्ष की आयु में, लेवी स्ट्रॉस का नींद में ही शांतिपूर्वक निधन हो गया।

उसके अंतिम संस्कार के दिन सैन फ़्रांसिस्को के लगभग सभी दुकानदारों ने अपनी दुकानें बंद कर दीं, ताकि वे उसे अंतिम श्रद्धांजलि दे सकें।

लेवी ऐसा व्यक्ति था, जिस पर लोग भरोसा करते थे और जिसका वे दिल से सम्मान करते थे।

उसके कुछ घनिष्ठ मित्र और कई पुराने कर्मचारी उसकी अर्थी को कंधा देने वालों में शामिल थे।

बाद में उसे सैन फ़्रांसिस्को के उत्तर में स्थित होम ऑफ़ पीस कब्रिस्तान में दफनाया गया।

लेवी के निधन के बाद लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी की ज़िम्मेदारी स्टर्न परिवार के चारों भाइयों ने संभाल ली।

दर्जी जैकब डेविस के बेटे साइमन डेविस ने भी अपने पिता की तरह कंपनी में उत्पादन पर्यवेक्षक (प्रोडक्शन सुपरवाइज़र) का पद संभाला।

इसके बाद कई पीढ़ियों तक यह कंपनी इन्हीं परिवारों के सदस्यों द्वारा चलाई जाती रही।

लेवी की मृत्यु के बाद भी कई दशकों तक "लेवी की पतलून" में बहुत कम बदलाव किए गए।

लेकिन बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में कंपनी को एक नई समस्या का सामना करना पड़ा।

लोग शिकायत करने लगे कि जीन्स की पिछली जेबों पर लगे ताँबे के रिवेट घोड़े की काठी और स्कूल की लकड़ी की मेज़ों को खरोंच देते हैं।

पहले इन रिवेटों को कपड़े से ढक दिया गया, ताकि वे सीधे बाहर न दिखें। बाद में उन्हें पूरी तरह हटा दिया गया।

कुछ और बदलावों का सुझाव कुछ काउबॉयों ने दिया। ऐसा ही एक सुझाव वाल्टर हास सीनियर ने भी दिया, जो 1928 से 1955 तक कंपनी के अध्यक्ष रहे।

एक बार श्री हास कैंपिंग पर गए हुए थे। उन्होंने, स्वाभाविक ही, लेवी की जीन्स पहन रखी थी। वे गलती से कैम्पफ़ायर के बहुत पास बैठ गए। आग की गर्मी से जीन्स का नीचे लगा ताँबे का रिवेट इतना गरम हो गया कि उन्हें असुविधा होने लगी।

वापस लौटने पर उन्होंने कंपनी के निदेशक मंडल से सुझाव दिया कि ज़िप के नीचे लगा रिवेट हटा दिया जाए।

निदेशक मंडल ने उनकी बात मान ली और वह रिवेट हटा दिया गया।

समय के साथ बहुत-सी बातें बदलीं, लेकिन बहुत-सी बातें आज भी वैसी ही हैं।

आज यह पारिवारिक कंपनी पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के लिए तरह-तरह के कपड़े बनाती है। उसके उत्पाद दुनिया के सत्तर से अधिक देशों में बेचे जाते हैं।

फिर भी कंपनी की सबसे प्रसिद्ध पहचान आज भी उसकी मज़बूत डेनिम की पतलून—501® जीन्स—ही है।

लेवी स्ट्रॉस को लोग हमेशा उस व्यक्ति के रूप में याद रखेंगे, जिसने एक साधारण-सी कामकाजी पतलून को दुनिया की सबसे प्रसिद्ध जीन्स बना दिया।

लेकिन उसे केवल एक सफल व्यापारी के रूप में याद करना पर्याप्त नहीं होगा। उसे उसकी उदारता, दयालुता और समाज-सेवा के लिए भी हमेशा सम्मान के साथ याद किया जाएगा।

सैन फ़्रांसिस्को बुलेटिन में प्रकाशित उसकी श्रद्धांजलि में लिखा गया था—

"श्री स्ट्रॉस कई बार करोड़पति बताए गए, लेकिन उन्होंने अपनी संपत्ति हमेशा खुले दिल और उदार हाथों से लोगों की भलाई के लिए खर्च की।"

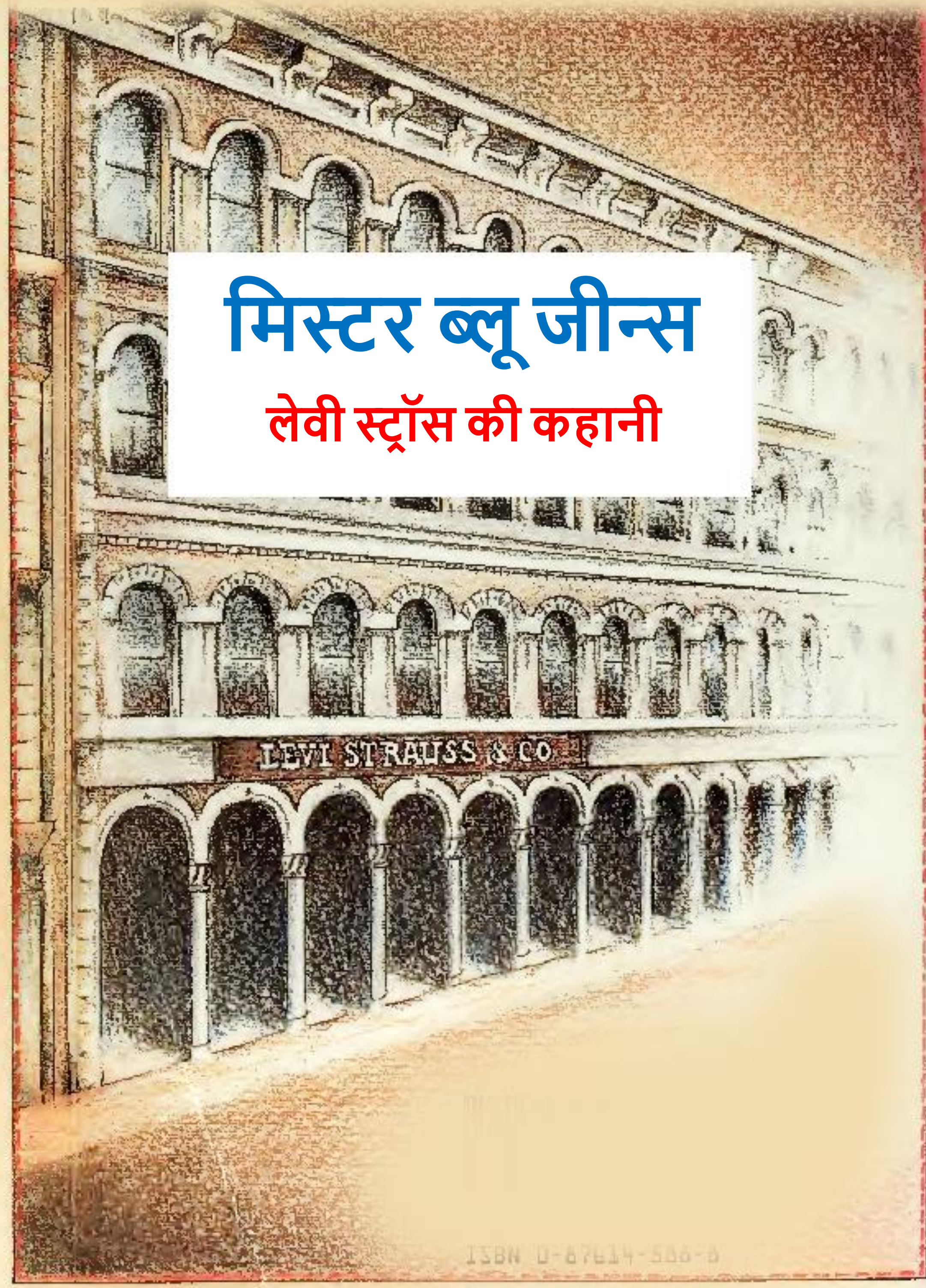
लेवी अपने आसपास की दुनिया और उसमें रहने वाले लोगों की सचमुच परवाह करता था।

शायद इसी कारण दुनिया भी उसे इतने वर्षों बाद आज तक सम्मान और स्नेह के साथ याद करती है।

समाप्त

मिस्टर ब्लू जीन्स

लेवी स्ट्रॉस की कहानी



ISBN 0-87614-588-8